डीआरडीओ समाचार

डीआरडीओ की मासिक गृह पत्रिका

https://www.drdo.gov.in/samachar
ISSN: 0971-4405
अप्रैल 2025 खण्ड 37 अंक 04

विज्ञान वैभव 2025: डीआरडीओ की वैज्ञानिक उत्कृष्टता और नवाचार का प्रदर्शन

डीआरडीओ समाचार के ई-संस्करण तक पहुंचने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

मुख्य संपादक: किरण चौहान
सह मुख्य संपादक: सुधांशु भूषण
संपादक: दीप्ति अरोरा
सहायक संपादक: धर्म वीर
अनुवादक: अनुराग कश्यप

प्रकाशन का 37वां वर्ष
अप्रैल 2025 खण्ड 37 अंक 04

हमारे संवाददाता

अहमदनगर	:	श्री आर ए शेख, वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (वीआरडीई)
अंबरनाथ	:	डॉ गणेश एस धोले, नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल)
चांदीपुर	:	श्री पी एन पांडा, एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर)
		श्री रत्नाकर एस महापात्रा, प्रूफ एवं प्रयोगात्मक संगठन (पीएक्सई)
बेंगलूरु	:	श्री सतपाल सिंह तोमर, वैमानिकी विकास स्थापना (एडीई)
		श्रीमती एम आर भुवनेश्वरी, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स)
		श्रीमती फहीमा ए जी जे, कृत्रिम ज्ञान एवं रोबोटिकी केंद्र (केयर)
		डॉ जोसेफिन निर्मला एम, युद्धक विमान प्रणाली विकास एवं एकीकरण केंद्र (कैसडिक)
		डॉ संचिता सिल तथा डॉ सुधीर एस काम्बले, रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डेबेल)
		डॉ वी सेंथिल, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जीटीआरई)
		श्रीमती साइमा बशीर, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रडार विकास स्थापना (एलआरडीई)
		सुश्री मीता जन, सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी)
चंडीगढ़	:	डॉ पाल दिनेश कुमार, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशला (टीबीआरएल)
		डॉ अनुजा कुमारी, रक्षा भू–सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरई)
चेन्नई	:	श्री के अंबाझगन, युद्धक वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (सीवीआरडीई)
देहरादून	:	श्री डी पी त्रिपाठी, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डील)
		श्री जे पी सिंह, यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आईआरडीई)
दिल्ली	:	श्री हेमंत कुमार, अग्नि, पर्यावरण तथा विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस)
		डॉ दीप्ति प्रसाद, रक्षा शरीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास)
		श्री संतोश कुमार चौधरी, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर)
		श्रीमति अरुण कमल, डीपीए आर ओ एंड एम, डीआरडीओ मुख्यालय
		डॉ नवीन कुमार सोनी, नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास)
		डॉ सुजाता दास, पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा)
		श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एसएजी)
		डॉ रुपेश कुमार चौबे, ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल)
ग्वालियर	:	डॉ एम के मेघवंशी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई)
हल्द्वानी	:	डॉ अतुल ग्रोवर, रक्षा जैव–ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डिबेर)
हैदराबाद	:	श्री हेमंत कुमार, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल)
		श्री श्रीनिवास जुलुरू, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल)
		श्री सीएच नरसिम्हाचारी, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल)
		श्री एस शशी नाथ, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)
जगदलपुर	:	श्री खिलावन सिंह, एसएफ परिसर (एसएफसी)
जोधपुर	:	श्री डी के त्रिपाठी, रक्षा प्रयोगशाला (डीएल)
कानपुर	:	डॉ मोहीत कटियार, रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई)
कोच्चि	:	श्रीमती लता एम एम, नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल)
लेह	:	डॉ डॉर्जी आंगचॉक, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (दिहार)
मसूरी	:	श्री सुनील भण्डारी, प्रौद्योगिकी प्रबंध संस्थान (आईटीएम)
मैसूर	:	डॉ एम पालमुरुगन, जैव–रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी)
नासिक	:	श्री आशुतोष शर्मा, ऊर्जस्वी पदार्थ उन्नत केंद्र (एसीईएम)
पुणे	:	श्री अजय के पांडे, आयुध अनुसंधान और विकास स्थापना (एआरडीई)
		डॉ विजय पट्टर, रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईएटी)
		डॉ गणेश शंकर डोम्बे, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल)
तेजपुर	:	डॉ के एस नखुरु, रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल)
विशाखापत्तनम	:	श्रीमती ज्योत्सना रानी, नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल)

इस अंक में

मुख्य लेख 4

नवोन्मेष 7
परीक्षण 8
समझौता ज्ञापन 11
घटनाक्रम 12
मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप 24
राजभाषा गतिविधियाँ 30
अवसंरचना विकास 33
कार्मिक समाचार 34
खेलकूद गतिविधियाँ 34
निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम 35

अपने सुझावों से हमें अवगत कराने के लिए कृपया संपर्क करें:
director.desidoc@gov.in; drdonl.desidoc@gov.in
दूरभाष: 011-23902403, 23902472, फैक्स: 011-23819151

वर्तमान अंक, *DRDO Newsletter,* Vol 45, Issue 04, April 2025, का हिंदी अनुवाद है।

"यदि आप उड़ नहीं सकते हो, तो दौड़ो। यदि दौड़ नहीं सकते हो, तो चलो। यदि चल भी नहीं सकते हो, तो रेंगो। लेकिन हमेशा आगे बढ़ते रहो।"
- मार्टिन लूथर किंग जूनियर

विज्ञान वैभव 2025: डीआरडीओ की वैज्ञानिक उत्कृष्टता और नवाचार का प्रदर्शन

''भारत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मजबूत और सुरक्षित रह सकता है, यदि उसके पास महत्वपूर्ण तकनीकी चुनौतियों का समाधान हो।'' श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सरकार का प्रयास 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत के युवाओं की क्षमता का दोहन करना है।

सर सी वी रमन द्वारा रमन प्रभाव की खोज के सम्मान में डीआरडीओ, एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (AeSI), हैदराबाद, तथा कलाम इंस्टीट्यूट ऑफ यूथ एक्सीलेंस फाउंडेशन, हैदराबाद, द्वारा 28 फरवरी 2025 से 2 मार्च 2025 के दौरान जीएमसी बालयोगी स्टेडियम, गाचीबावली, हैदराबाद, में 'विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना' विषय पर एक विशाल कार्यक्रम 'विज्ञान वैभव–2025' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम वैज्ञानिक योगदान को मान्यता देने, छात्र समुदाय में वैज्ञानिक जागरूकता, वैज्ञानिक सोच बढ़ाने, युवा प्रतिभाओं को वैज्ञानिक अनुसंधान की ओर आकर्षित करने तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए आयोजित किया गया।

तीन दिवसीय इस कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह तथा तेलंगाना के माननीय मुख्यमंत्री श्री ए रेवंत रेड्डी ने किया, जिसमें लगभग 200 प्रदर्शनी स्टॉल थे और इसमें 30,000 से अधिक स्नातक छात्रों ने भाग लिया है। श्री राजनाथ सिंह

ने वैज्ञानिक विचार के महत्व पर जोर दिया तथा युवाओं को देश की मजबूती और सुरक्षा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग, मशीन लर्निंग और क्लीन टेक जैसी उभरती हुई तकनीकों की जानकारी हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में शिक्षा के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

तेलंगाना के माननीय मुख्यमंत्री श्री ए रेवंत रेड्डी ने रक्षा क्षेत्र में वैज्ञानिक उत्कृष्टता में हैदराबाद की ऐतिहासिक भूमिका को सबके सामने रखा तथा छात्रों को नवाचार अपनाने और उच्च लक्ष्य रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने रक्षा क्षेत्र में विकास के लिए इंजीनियरों की भी वकालत की और रक्षा संबंधी स्टार्ट–अप में निवेश और विकास को प्रोत्साहित करने के लिए हैदराबाद–बैंगलोर रक्षा औद्योगिक गलियारे का सुझाव दिया।

डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ; AeSI के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ जी सतीश रेड्डी; महानिदेशक (एमएसएस), श्री यू राजा बाबू; निदेशक, डीआरडीएल, डॉ जीए श्रीनिवास मूर्ति; तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने छात्र सभा को संबोधित किया।

डीआरडीओ ने मिसाइल और सामरिक प्रणाली (एमएसएस), वैमानिकी प्रणाली (एयरो), इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार प्रणाली (ईसीएस), नौसेना प्रणाली और सामग्री (एनएसएंडएम), आयुध और लड़ाकू इंजीनियरिंग प्रणाली (एसीई), सैनिक सहायता प्रणाली (एसएसएस), मानव संसाधन (एचआर), तथा प्रौद्योगिकी प्रबंधन (टीएम) से संबंधित प्रौद्योगिकियों और उत्पादों का प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनी में भारतीय नौसेना, भारतीय वायुसेना, इसरो, एनजीआरआई, सीसीएमबी, आईआईसीटी, बीईएल, बीडीएल, ईसीआईटी, मिधानी, एचएएल, ब्रह्मोस एयरोस्पेस, तथा

शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया जैसी प्रमुख कंपनियों ने भाग लिया। इसके अलावा सोलर इंडस्ट्रीज, वीईएम टेक्नोलॉजीज, इलेक्ट्रो सर्किट सिस्टम्स, डेटा पैटर्न्स, पारस डिफेंस, अपोलो माइक्रो सिस्टम्स, आईसीओएमएम टेली, अनुवेगा टेक्नोलॉजीज, डोम डायनेमिक टेक्नोलॉजीज, फिलिप्स मशीन टूल्स इंडिया, एचबीएल इंजीनियरिंग लिमिटेड, आरआर इंडस्ट्रीज, अनंत टेक्नोलॉजीज, एलपीएसआईएस प्राइवेट लिमिटेड, अपोलो कंप्यूटिंग लैब्स, डिजिलॉजिक सिस्टम्स, जीटा टेक, एक्यूरेट इंडस्ट्रियल कंट्रोल्स आदि जैसी कई निजी कंपनियों ने भी भाग लिया।

छात्रों और शिक्षकों को वास्तविक मिसाइलों, अर्टिलरी गन्स, टैंकों, और रडारों ने आकर्षित किया। प्रदर्शनी में रखे गए कुछ प्रमुख उत्पादों में हाल ही में परीक्षण की गई हाइपरसोनिक मिसाइल, प्रलय मिसाइल, पिनाका मिसाइल सिस्टम, शॉर्ट–रेंज बैलिस्टिक ग्लाइड मिसाइल सिस्टम, अग्नि 5, आकाश मिसाइल, रुद्रम–II (एंटी–रेडिएशन मिसाइल) और

रुद्रम–II, मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन, एडवांस टोड आर्टिलरी गन सिस्टम, 155 मिमी गन, स्पेस ऑन व्हील्स, ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम, एलसीए, ड्रोन, और एडवांस रडार सिस्टम शामिल थे। तीन दिवसीय प्रदर्शनी का मुख्य लक्ष्यों में से एक युवाओं को रक्षा और एयरोस्पेस में करियर के अवसरों के बारे में जागरूक करना और नई प्रौद्योगिकियों का पता लगाकर और उनके भविष्य के करियर पथों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करके उन्हें शामिल करना था। उद्योग विशेषज्ञों के साथ संवादात्मक सत्र उपलब्ध थे, जिससे छात्रों को प्रश्न पूछने और अनुसंधान क्षेत्रों के बारे में अधिक जानने का अवसर मिला।

तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में 1.2 लाख से अधिक लोगों की उपस्थिति दर्ज की गई।

एमएचए-डीआरडीओ सहयोग -- आंतरिक सुरक्षा और आपदा राहत अभियानों पर सम्मेलन

डीआरडीओ मुख्यालय में पीसीीएंडएसआई क्लस्टर के तहत कार्यरत कम तीव्रता संघर्ष निदेशालय (डीएलआईसी) ने 4–5 मार्च 2025 के दौरान डीआरडीओ मुख्यालय, नई दिल्ली, में 'आंतरिक सुरक्षा और आपदा राहत अभियान' विषय पर दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का लक्ष्य सीएपीएफ अधिकारियों (मुख्य रूप से फील्ड अधिकारियों) की एक विस्तृत श्रृंखला को डीआरडीओ प्रयोगशालाओं में प्रदत्त कौशल और ज्ञान से परिचित कराना था, साथ ही उन उत्पादों को भी शामिल करना था जो इन बलों को उनके काम में आने वाली तकनीकी समस्याओं से निपटने में मदद करने के लिए बनाए गए हैं। इन उत्पादों का उपयोग आंतरिक सुरक्षा, कानून और व्यवस्था, तथा आपदा राहत के लिए किया जाता है।

सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह उपस्थित थे। रक्षा मंत्रालय और गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी, जैसे थल सेनाध्यक्ष, सचिव DP, सचिव सीमा प्रबंधन, तथा कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उद्घाटन समारोह में शामिल हुए। माननीय रक्षा मंत्री ने आंतरिक सुरक्षा और आपदा राहत कार्यों पर चर्चा के लिए इस तरह के सम्मेलन के आयोजन के लिए डीआरडीओ की सराहना की, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि डीआरडीओ अब आंतरिक सुरक्षा अनुप्रयोगों के लिए अपनी विकसित तकनीकों को अनुकूलित और उपयोग कर रहा है। डीआरडीओ द्वारा विकसित उत्पादों के तीन संग्रह भी जारी किए गए, अर्थात् कम तीव्रता वाले संघर्षों के लिए संग्रह, पुलिस संचालन के लिए संग्रह, और आपदा राहत कार्यों के लिए संग्रह।

डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, ने अपने स्वागत संबोधन में बताया कि डीएलआईसी की स्थापना डीआरडीओ प्रौद्योगिकियों के साथ इन बलों की तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए गृह मंत्रालय के सुरक्षा बलों और डीआरडीओ के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए एक सिंगल–विंडो कॉर्पोरेट निदेशालय के रूप में की गई है।

सीमा प्रबंधन सचिव ने बताया कि गृह मंत्रालय–डीआरडीओ सहयोग के तहत, बड़ी संख्या में उत्पादों को शामिल किया गया है, जबकि नए उत्पाद विकासाधीन हैं और गृह मंत्रालय की सेवाओं में शामिल होने के विभिन्न चरणों में हैं, तथा उन्होंने सभी हितधारकों से उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए मिलकर काम करने का आग्रह किया।

दो दिवसीय इस कार्यक्रम के दौरान, गृह मंत्रालय और डीआरडीओ के मध्यस्थों के साथ सात तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। डीआरडीओ उद्योग भागीदारों के माध्यम से विकसित तथा डीआरडीओ द्वारा डिजाइन की गई प्रौद्योगिकियों और उत्पादों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

बड़ी संख्या में उद्योगों ने छोटे हथियारों, संचार, निगरानी, भीड़ नियंत्रण अनुप्रयोग, सैनिक सुरक्षा, और कुशलता आदि से लेकर सीबीआरएन उपकरण, ड्रोन एवं एंटी–ड्रोन जैसे उत्पादों का प्रदर्शन किया।

आईआरडीई द्वारा पैसिव फूरियर ट्रांसफॉर्म इन्फ्रारेड सेंसर का विकास

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आईआरडीई), देहरादून, ने स्वदेशी रूप से एक पैसिव फूरियर ट्रांसफॉर्म इन्फ्रारेड (FTIR) रासायनिक सेंसर विकसित किया है जो खोज और पहचान करने के लिए रासायनिक बादलों के फिंगरप्रिंट स्पेक्ट्रोस्कोपिक हस्ताक्षर प्रदान करता है। सेंसर की विशेषताएं हैं पैसिव डिटेक्शन/गुप्त संचालन, आईओटी सक्षम और क्लाउड इमेज का GIS ओवरले, निम्न गलत अलार्म दर, स्थानीय/दूरस्थ संपर्क, दिन/रात संचालन क्षमता, तथा बिल्ट–इन सेल्फ–टेस्ट (BIST)।

सेंसर की तकनीकी विशिष्टताओं में स्पेक्ट्रल रेंजः 8 से 12 μm, स्पेक्ट्रल रिजॉल्यूशनः 4 cm^{-1}, पता लगाने की रेंजः 500 m, CW एजेंटों (SF_6, DMMP, TDG, आदि) के सिमुलेटरों के रसायनों का परीक्षण, पता लगाने का समयः 1 सेकंड, डिटेक्टिविटीः 100 ppm, पर्यावरण योग्यताः IP 65 और JSS 55555। आकारः 65 cm x 45 cm x 40 cm तथा भारः 25 kg। क्षेत्र परीक्षण ने 500 m की दूरी पर रासायनिक बादलों का सफलतापूर्वक पता लगाया। FTIR के लिए विकास भागीदार मेसर्स ऑप्टिक्स एंड एलाइड इंजीनियरिंग, बेंगलुरु है।

FTIR के विकास के लिए टीम लीडर डॉ एनआर दास, वैज्ञानिक 'जी' हैं, जबकि डॉ दीपक कुमार, वैज्ञानिक 'एफ' तथा श्री अंजेश कुमार, वैज्ञानिक 'ई' क्रमशः परियोजना निदेशक और उप परियोजना निदेशक हैं। रजनी मल्होत्रा, वैज्ञानिक 'एफ'; हेत राम स्वामी, वैज्ञानिक 'एफ'; अरविंद बंसल, तकनीकी अधिकारी 'बी'; प्रदीप शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'बी'; और प्रकाश सिंह, तकनीकी अधिकारी 'ए' टीम में शामिल सदस्य हैं। डॉ अजय कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईआरडीई, ने इस सेंसर के सफल विकास के लिए टीम लीडर, परियोजना निदेशक, उप परियोजना निदेशक, और सभी टीम सदस्यों को बधाई दी।

डीआरडीओ तथा भारतीय नौसेना ने अपनी तरह की पहली नौसेना एंटी-शिप मिसाइल का सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण किया

डीआरडीओ तथा भारतीय नौसेना ने 25 फरवरी, 2025 को चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर) से अपनी तरह की पहली नौसेना एंटी–शिप मिसाइल (NASM-SR) का सफल उड़ान परीक्षण किया। परीक्षणों ने भारतीय नौसेना के सीकिंग हेलीकॉप्टर से लॉन्च किए जाने पर जहाज के लक्ष्यों के खिलाफ मिसाइल की क्षमता का प्रदर्शन किया।

परीक्षणों ने मिसाइल की मैन–इन–लूप विशेषता को साबित किया और इसकी अधिकतम सीमा पर सी–स्किमिंग मोड में एक लक्ष्यरुपी छोटे जहाज पर सीधा प्रहार किया।

मिसाइल अंतस्थ मार्गदर्शन के लिए एक स्वदेशी इमेजिंग इंफ्रा–रेड सीकर का उपयोग करती है। मिशन ने उच्च बैंडविथ दो–मार्गीय डेटा–लिंक सिस्टम का भी प्रदर्शन किया, जिसका उपयोग सीकर की लाइव छवियों को इन–फ्लाइट पुनः लक्ष्यीकरण के लिए पायलट को वापस भेजने के लिए किया जाता है।

प्रक्षेपण मोड में प्रक्षेपित करने के बाद, मिसाइल ने केवल बेयरिंग–ओनली लॉक–ऑन में संलग्न होकर, नजदीकी इलाके से एक लक्ष्य का चयन किया। मिसाइल ने शुरू में खोज के निर्दिष्ट क्षेत्र के भीतर एक बड़े लक्ष्य पर लॉक किया, और टर्मिनल चरण के दौरान, पायलट ने एक छोटे छिपे हुए लक्ष्य का चयन किया, जिसके परिणामस्वरूप इसे सटीक रूप से नष्ट किया जा सका।

मिसाइल में फाइबर ऑप्टिक जाइरोस्कोप पर आधारित एक इनर्शियल नेविगेशन सिस्टम (INS) और इसके मध्य मार्ग को निर्देशित करने के लिए एक रेडियो अल्टीमीटर है। इसमें एक एकीकृत एवियोनिक्स मॉड्यूल, इसके वायुगतिकी और जेट वेन, थर्मल बैटरी और एक PCB वारहेड को नियंत्रित करने के लिए इलेक्ट्रोमैकेनिकल एक्चूएटर भी हैं।

यह इन–लाइन इजेक्टेबल बूस्टर और लॉन्ग–बर्न सस्टेनर के साथ ठोस प्रणोदक का उपयोग करती है। परीक्षणों ने सभी मिशन उद्देश्यों को पूरा किया।

मिसाइल को विभिन्न प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित किया गया है, जिसमें रिसर्च सेंटर इमारत (आरसीआई), रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल), उच्च ऊर्जा सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल), तथा चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल) शामिल हैं।

मिसाइलों का निर्माण वर्तमान में एमएसएमई, स्टार्ट–अप्स, और अन्य उत्पादन भागीदारों की मदद से विकास–सह–उत्पादन भागीदारों द्वारा किया जा रहा है।

माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने सफल उड़ान परीक्षणों के लिए डीआरडीओ, भारतीय नौसेना, और उद्योगों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि मैन–इन–लूप सुविधाओं के लिए परीक्षण अद्वितीय हैं, क्योंकि वे उड़ान के दौरान पुनः लक्ष्यीकरण की क्षमता प्रदान करते हैं।

एलसीए-तेजस में स्वदेशी रूप से विकसित एकीकृत जीवन समर्थन प्रणाली के उच्च-ऊँचाई परीक्षण की सफलता के साथ भारत ने उपलब्धि हासिल की

स्वदेशी रूप से विकसित ऑन–बोर्ड ऑक्सीजन जनरेटिंग सिस्टम (OBOGS)–केंद्रित एकीकृत जीवन समर्थन प्रणाली (ILSS) का सफल उड़ान परीक्षण लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (LCA) PV3 पर किया गया। इस महत्वपूर्ण परीक्षण में डेबेल द्वारा विकसित ILSS को व्यापक उड़ान योग्यता प्रमाणन प्रक्रिया से गुजरना पड़ा, जिसमें 50,000 फीट AMSL तक की ऊंचाई और 6 g तक का त्वरण बल शामिल है, जो भारत की एयरोस्पेस प्रौद्योगिकी में एक महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति को दर्शाता है। इस तकनीकी उपलब्धि के साथ, भारत ऐसे पाँच देशों के समूह में शामिल हो गया है, जिनके पास ऐसी उन्नत जीवन रक्षक क्षमताएँ हैं, जो अत्याधुनिक रक्षा तकनीकों में आत्मनिर्भरता के लिए देश की दृढ़ प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है और वर्तमान सरकार के विकासशील भारत 2047 के लक्ष्य को सुदृढ़ करता है।

इस प्रणाली की अवधारणा और विकास रक्षा जैव प्रौद्योगिकी एवं विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डेबेल) द्वारा किया गया है। इस प्रणाली का निर्माण मेसर्स लार्सन एंड टुब्रो द्वारा विकास–सह–उत्पादन भागीदार के रूप में किया गया, जो डीआरडीओ और निजी क्षेत्र के बीच सफल सहयोग को दर्शाता है।

ILSS में OBOGS के साथ–साथ अन्य 10 लाइन रिप्लेसेबल यूनिट्स (LRU) हैं। OBOGS पायलट के लिए प्राथमिक श्वास गैस स्रोत की भूमिका निभाता है। यह विमान के पर्यावरण नियंत्रण प्रणाली (ईसीएस) से निकलने वाली ब्लीड एयर का उपयोग आणविक छलनी के ट्विन बेड्स में इनपुट के रूप में करता है और प्रेशर स्विंग अधिशोषण के माध्यम से ऑक्सीजन युक्त हवा उत्पन्न करता है, जिससे उड़ान के दौरान सांस लेने वाली गैस की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित होती है।

पायलट की सुरक्षा और परिचालन विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए, ILSS एक गैसीय बैकअप ऑक्सीजन सिस्टम से लैस है, जो प्रदर्शन या खराबी के तहत OBOGS पर सक्रिय होता है, जिससे निर्बाध ऑक्सीजन की आपूर्ति सुनिश्चित होती है। आपातकालीन ऑक्सीजन प्रणाली इजेक्शन परिदृश्यों के दौरान ऑक्सीजन प्रदान करती है, जिससे पायलट को गंभीर परिस्थितियों में सुरक्षा मिलती है। एक ऑन–बोर्ड ठोस अवस्था जिरकॉनिया ऑक्सीजन सेंसर लगातार ऑक्सीजन सान्द्रता

को मापता है और डेटा को एक इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोल यूनिट (ECU) को भेजता है, जो ILSS के सभी लाइन रिप्लेसेबल यूनिट्स (LRU) के संचालन की देखरेख करता है। ECU, मिशन कंप्यूटर के साथ भी संचार करता है ताकि ILSS की स्थिति को एक समर्पित मल्टी फंक्शन डिस्प्ले (MFD) पेज पर प्रदर्शित किया जा सके।

ILSS ने 1 फरवरी, 2023 को अपनी पहली उड़ान भरी और तब से कई कठोर परीक्षण बिंदुओं से गुजर चूका है, जिसका समापन हाल ही में उच्च–ऊंचाई वाले परीक्षण में हुआ।

ILSS के उड़ान परीक्षण के दौरान, पायलट विभिन्न उड़ान स्थितियों में इसके प्रदर्शन का आकलन करने के लिए कई मूल्यांकन करता है। परीक्षण विमान, LCA PV3, महत्वपूर्ण स्थानों पर ऑनबोर्ड फ्लाइट टेस्ट इंस्ट्रूमेंटेशन सेंसर से भी लैस है, जो प्रणाली मापदंडों की निरंतर निगरानी करता है और आगे के अनुकूलन और प्रमाणन के लिए डिजाइनरों को वास्तविक समय प्रतिक्रिया प्रदान करता है। ये प्रयास व्यापक उड़ान योग्यता प्रमाणन प्रक्रिया का हिस्सा हैं, जो भविष्य के लड़ाकू विमानों, उन्नत मध्यम लड़ाकू विमानों, और ट्विन इंजन डेक आधारित लड़ाकू विमानों में ILSS के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

ILSS का सफल विकास निम्नलिखित संगठनों के बीच सहज तालमेल को दर्शाता है, जिनमें से प्रत्येक ने अपने विशेषज्ञ क्षेत्र में सहयोग दिया:

- वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीए), बेंगलुरु
- सैन्य उड़ान योग्यता एवं प्रमाणन केंद्र (सेमीलेक), बेंगलुरु
- राष्ट्रीय उड़ान परीक्षण केंद्र (एनएफटीसी), बेंगलुरु
- एयरोनॉटिकल क्वालिटी एश्योरेंस महानिदेशालय
- इंस्टीट्यूट ऑफ एयरोस्पेस मेडिसिन (आईएएम), बेंगलुरु
- हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड

ILSS का सफल विकास और परीक्षण न केवल भारतीय वायु सेना की परिचालन क्षमताओं को बढ़ाएगा, बल्कि लड़ाकू विमानों के लिए जीवन रक्षक प्रौद्योगिकियों में भविष्य की प्रगति के लिए एक मजबूत आधार भी तैयार करेगा।

एडीआरडीई में सैन्य लड़ाकू पैराशूट की कॉम्बैट फ्रीफॉल छलांग

एक महत्वपूर्ण उपलब्धि में, हवाई डिलीवरी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (एडीआरडीए), आगरा, द्वारा विकसित सैन्य लड़ाकू पैराशूट सिस्टम की कॉम्बैट फ्रीफॉल छलांग, पूर्ण कॉम्बैट लोड के साथ 27000 फीट की ऊंचाई से लगाई गई, जिससे यह वर्तमान में भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला एकमात्र पैराशूट सिस्टम बन गया, जिसे 25000 फीट से ऊपर तैनात किया जा सकता है।

यह छलांग विंग कमांडर विशाल लखेश वीएम (जी), एमडब्ल्यूओ आर जे सिंह, एमडब्ल्यूओ एए बैद्य द्वारा लगाई गइ, जिसमें स्वदेशी लड़ाकू पैराशूट सिस्टम की प्रभावशीलता का प्रदर्शन किया गया। यह सिस्टम उन्नत सामरिक विशेषताएं प्रदान करता है, जिसमें निम्न अवरोहण दर और उन्नत

स्टीयरिंग क्षमताएं शामिल हैं।

यह पैराट्रूपर्स को विमान से कूदने और पूर्व निर्धारित ऊंचाई पर अपने पैराशूट को तैनात करने, निर्दिष्ट क्षेत्रों में नेविगेट करने और सुरक्षित लैंडिंग करने में सक्षम बनाता है।

एलसीए तेजस एएफ मार्क-I ने दृश्य सीमा से परे हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल का परीक्षण किया

वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीए), बेंगलुरु, ने एलसीए एएफ मार्क-I प्रोटोटाइप लड़ाकू विमान से स्वदेशी ASTRA, बियॉन्ड विजुअल रेंज एयर–टू–एयर मिसाइल (BVRAAM) का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। यह परीक्षण 12 मार्च 2025 को ओडिशा के चांदीपुर तट पर किया गया।

टेस्ट–फायरिंग ने उड़ते हुए लक्ष्य पर मिसाइल के सीधे प्रहार को सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया। सभी उपप्रणालियों ने सटीक प्रदर्शन किया, सभी मिशन मापदंडों और उद्देश्यों को पूरा किया। ASTRA मिसाइल को डीआरडीओ द्वारा डिजाइन और विकसित किया गया है, जो 100 किलोमीटर से अधिक दूरी तक लक्ष्य को भेदने में सक्षम है और उन्नत मार्गदर्शन और नेविगेशन क्षमताओं से लैस है जो मिसाइल को अधिक सटीकता के साथ लक्ष्यों को नष्ट करने के काबिल बनाता है। भारतीय वायु सेना ने पहले ही मिसाइल को स्वीकार कर लिया है।

सफल परीक्षण–फायरिंग एलसीए एएफ मार्क-I ए संस्करण को शामिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह सफलता एडीए, डीआरडीओ और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, और तकनीशियनों की एकीकृत टीम की कड़ी मेहनत का नतीजा है, साथ ही सेमीलेक, डीजी–एक्यूए, आईएएफ, और टेस्ट रेंज टीम का भी सहयोग है। प्रदर्शन मूल्यांकन के लिए आगे के परीक्षणों की योजना बनाई गई है।

डीआरडीओ और भारतीय सेना के बीच समझौता ज्ञापन

भारतीय सेना और डीआरडीओ के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए ताकि ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल) से 509 आर्मी बेस वर्कशॉप को तकनीकी विशेषज्ञता के हस्तांतरण को सुगम बनाया जा सके। इस सहयोग का उद्देश्य 0.5–वाट स्टर्लिंग क्रायोकूलर के उत्पादन को आगे बढ़ाना है, जो भारतीय सेना द्वारा उपयोग किए जाने वाले थर्मल इमेजिंग उपकरणों में एक आवश्यक घटक है।

यह अभूतपूर्व समझौता ज्ञापन न केवल भारतीय सेना की स्वदेशी विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाएगा बल्कि आयात पर निर्भरता को भी कम करेगा। यह घरेलू तकनीकी नवाचार को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम है और रक्षा उत्पादन में पर्याप्त लागत बचत लाएगा।

एसएसपीएल द्वारा विकसित स्वदेशी स्टर्लिंग क्रायोकूलर में कम वजन, कम स्थायी–दशा विद्युत खपत, और सटीक तापमान नियंत्रण जैसी महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। हैंडहेल्ड थर्मल इमेजर्स और टैंक थर्मल साइट्स इसका उपयोग क्रायोजेनिक कूलिंग के लिए करते हैं।

भारतीय मौसम विभाग को एरोसोल लिडार प्रणाली सौंपी गई

डॉ बी के दास, महानिदेशक (ईसीएस), ने 12 मार्च 2025 को दिल्ली स्थित डीआरडीओ भवन में श्री एलसी मंगल, महानिदेशक (टीएम) की मौजूदगी में भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक डॉ मृत्युंजय महापात्रा को स्वदेशी रूप से विकसित एरोसोल लिडार प्रणाली सौंपी। इस प्रणाली को देहरादून स्थित यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आईआरडीई) ने विकसित किया है। यह प्रणाली 20 किलोमीटर तक एरोसोल प्रोफाइल और 5 किलोमीटर तक जल वाष्प प्रोफाइल को माप सकती है। यह प्रणाली वायुमंडलीय अनुसंधान, जलवायु अध्ययन, वायु गुणवत्ता, निगरानी और मौसम पूर्वानुमान मॉडल को बढ़ाने में मदद करेगी।

रक्षा मंत्री ने हैदराबाद में डीआरडीओ के डॉ एपीजे अब्दुल कलाम मिसाइल कॉम्प्लेक्स का दौरा किया

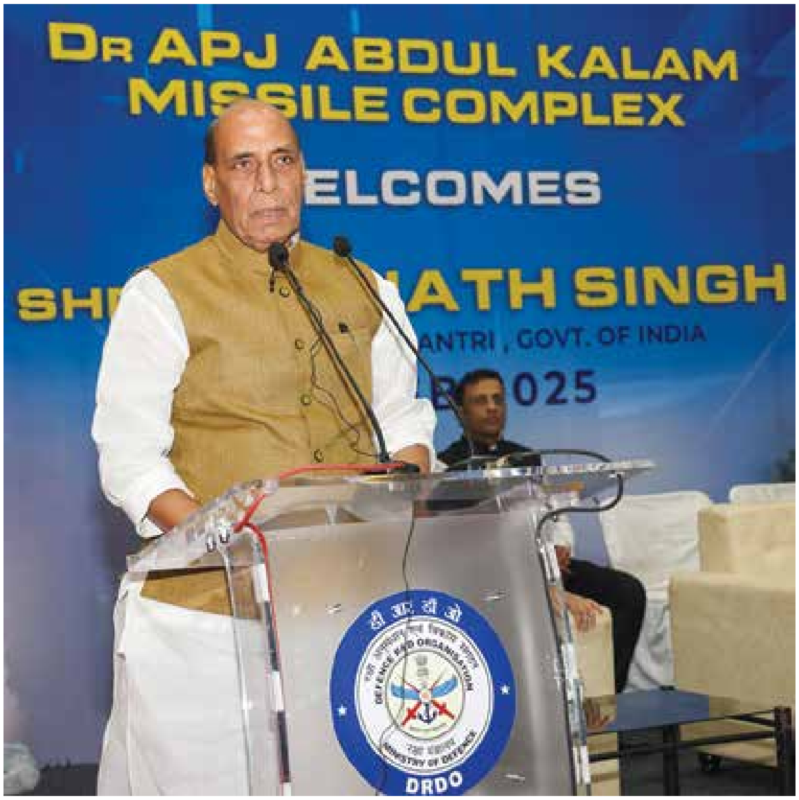

माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने 28 फरवरी 2025 को हैदराबाद, तेलंगाना, में स्वदेशी मिसाइल प्रणालियों के डिजाइन और विकास के लिए तंत्रिका केंद्र, डीआरडीओ के डॉ एपीजे अब्दुल कलाम मिसाइल कॉम्प्लेक्स का दौरा किया।

उन्हें रिसर्च सेंटर इमारत (आरसीआई) द्वारा किए जा रहे मिसाइल प्रौद्योगिकियों और संबंधित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी गई। इस अवसर पर डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ तथा आरसीआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अधिकारी मौजूद थे।

श्री राजनाथ सिंह ने लंबी दूरी की हाइपरसोनिक एंटी–शिप मिसाइल परियोजना से जुड़ी टीम को भी सम्मानित किया, जिसका सफल उड़ान परीक्षण नवंबर 2024 में हुआ था। सफल परीक्षण ने भारत को हाइपरसोनिक मिसाइल क्षमताओं वाले चुनिंदा देशों के समूह में शामिल कर दिया है।

वैज्ञानिकों से बातचीत करते हुए, माननीय रक्षा मंत्री ने भारत की रक्षा क्षमताओं में उनके अद्वितीय योगदान के लिए उनकी सराहना की और विश्वास व्यक्त किया कि, ठोस प्रयासों से,

भारत 2027 तक खुद को शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में पाएगा। उन्होंने उनसे समर्पण और ईमानदारी के साथ काम करते हुए अपनी परियोजनाओं में तेजी से विकसित हो रहे तकनीकी परिवर्तन को ध्यान में रखना जारी रखने का आह्वान किया। श्री सिंह ने इस अवसर पर डॉ एपीजे अब्दुल कलाम को भी श्रद्धांजलि दी। उन्होंने जोर देकर कहा कि हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से मिसाइल विकास में पूर्व राष्ट्रपति के योगदान को कभी नहीं भूलेंगे। अपने संबोधन में, डीआरडीओ के अध्यक्ष ने महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के विकास और यह सुनिश्चित करने के लिए संगठन की प्रतिबद्धता दोहराई कि भारत आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ एक प्रौद्योगिकी नेता भी बने। उन्होंने कहा, "डीआरडीओ माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के इस दृष्टिकोण को साकार करने का प्रयास करेगा कि रक्षा प्रणालियाँ भारत में बनाई जाएँ और दुनिया के लिए बनाई जाएँ।"

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस हर साल भारतीय वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकट रमन द्वारा वर्ष 1928 में फोटॉन के प्रकीर्णन की खोज के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस घटना को बाद में 'रमन प्रभाव' के रूप में जाना गया, जिसके लिए उन्हें 1930 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार मिला। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 का विषय 'विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना' था, जो युवा मष्तिष्कों को प्रोत्साहित करने, अभूतपूर्व योगदान को मान्यता देने, और भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का जश्न मनाने पर केंद्रित है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस को रोजमर्रा की जिंदगी में विज्ञान के महत्व को बढ़ावा देने और मानवता की भलाई के लिए वैज्ञानिक क्षेत्र में विभिन्न गतिविधियों, प्रयासों, और उपलब्धियों को उजागर करने के लिए मनाया जाता है। डीआरडीओ की निम्नलिखित प्रयोगशालाओं ने अपने–अपने स्थानों पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया।

एआरडीई, पुणे

आयुध अनुसंधान एवं विकास स्थापना (एआरडीई), पुणे, ने 3 मार्च 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। इस अवसर पर श्री ए राजू, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एआरडीई, ने एआरडीई परिवार को संबोधित किया तथा समाज के लिए विज्ञान के लाभ और वैज्ञानिक समुदाय द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस को उत्सव के रूप में मनाए जाने पर प्रकाश डाला। सुश्री निकिता मित्तल, वैज्ञानिक 'एफ' ने 'आर्टिलरी रॉकेट के वायुगतिकी पर आंतरिक प्राक्षेपिकी का प्रभाव' विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे के कुलपति प्रो0 सुरेश गोसावी मुख्य अतिथि थे। अपने संबोधन में उन्होंने रक्षा उत्पादों के डिजाइन एवं विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर प्रकाश डाला। समारोह का समापन विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करने के साथ हुआ। डॉ एस प्रेमकुमार, वैज्ञानिक 'एफ' एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

केयर, बेंगलुरु

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलुरु, ने 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। श्रीमती मनुप्रिया श्रीवास्तव वैज्ञानिक 'एफ' ने केयर परिवार का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के ऐतिहासिक महत्व से अवगत कराया। रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट, बेंगलोर से प्रो0 उर्वशी सिन्हा मुख्य अतिथि थीं। डॉ ऋतुराज कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, केयर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए राष्ट्र की प्रगति और सामान्य रूप से मानव विकास में विज्ञान की भूमिका पर जोर दिया। इसके बाद मुख्य अतिथि ने क्वांटम कंप्यूटिंग और सुरक्षित क्वांटम संचार में अपने कार्य को शामिल करते हुए 'लाइट, कैमरा, एक्शन' विषय पर एक व्याख्यान दिया। श्री वीसी रवि वैज्ञानिक 'एफ' ने 'ऑटोनोमस रोबोट नेविगेशन के लिए ट्रैक्ड प्लेटफॉर्म मोशन मॉडलिंग' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने प्रभावी प्रक्षेप्य पथ नियंत्रण के लिए भौतिक प्लेटफॉर्म की गतिशील विशेषताओं को मॉडलिंग करने की आवश्यकता पर चर्चा की।

कैसडिक , बेंगलुरु

युद्धक विमान प्रणालियाँ विकास एवं एकीकरण केंद्र (कैसडिक), बेंगलुरु, ने 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया, जिसमें श्री सौरव हलदर, वैज्ञानिक 'डी' ने 'ब्रॉडबैंड विवाल्डी एंटीना ऐरे का डिजाइन और ईडब्ल्यू अनुप्रयोगों में पोलराइजर' विषय पर

व्याख्यान दिया।

एंटीना के आधरभूत भागों, एंटीना ऐरेज, सक्रिय फेज एंटीना ऐरेज विवाल्डी एंटीना ऐरे का डिजाइन एवं विज्ञान, ब्रॉडबैंड पोलराइजर का डिजाइन, ब्रॉडबैंड प्लानर विवाल्डी एंटीना ऐरेज की जरूरतें, और ईडब्ल्यू अनुप्रयोगों के लिए पोलराइजर सभी विषयों पर चर्चा की गई। श्री राजीव मराठे, वैज्ञानिक 'एच' एवं उत्कृष्ट वैज्ञानिक, केंद्र प्रमुख, कैसडिकए ने उन्हें राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक और प्रमाण पत्र प्रदान किया।

सीवीआरडीई, चेन्नई

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास संस्थापन (सीवीआरडीई), चेन्नई, ने 28 फरवरी, 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। श्री एल बालाजी, वैज्ञानिक 'ई' ने इस दिवस के महत्व पर जोर देते हुए स्वागत संबोधन दिया। इस अवसर पर, श्री एनएस प्रसाद, वैज्ञानिक 'एफ' ने 'उच्च शक्ति घनत्व एएफवी इंजन के डिजाइन और विकास' पर व्याख्यान प्रस्तुत किया और AFV इंजन के डिजाइन और विकास में उपयोग की जाने वाली विभिन्न तकनीकों पर प्रकाश डाला। श्री जे राजेश कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, सीवीआरडीई, ने सभा को संबोधित किया और वक्ता को सम्मानित किया। अपने संबोधन के दौरान, निदेशक ने वैज्ञानिकों के अमूल्य योगदान को याद किया और मेक इन इंडिया के तहत गुणवत्तापूर्ण उत्पाद देने के लिए वैज्ञानिक जिज्ञासा की भावना को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

डीआईबीटी, मैसूर

जैव–रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी), मैसूर, ने 28 फरवरी 2025 को जैव–रक्षा अनुसंधान में प्रगति पर प्रकाश डालने वाले कई व्यावहारिक सत्रों के साथ राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। डॉ एन इलैयाराजा, वैज्ञानिक 'ई' ने स्वागत संबोधन दिया, जिससे डॉ जी फणीकुमार, वैज्ञानिक 'एफ' के मुख्य व्याख्यान के लिए मंच तैयार हुआ। डॉ फणीकुमार ने 'जैविक युद्ध एजेंटों के रूप में शैवाल विषाक्त पदार्थ और उनके जैव–रक्षा महत्व' विषय पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने जैविक युद्ध एजेंटों के प्रतिकूल प्रभावों, राष्ट्रीय सुरक्षा पर उनके प्रभावों, और सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति को बाधित करने की उनकी क्षमता के बारे में विस्तार से बताया। उनके व्याख्यान में हानिकारक शैवालों के खिलने, विभिन्न शैवाल विषाक्त पदार्थों की विषाक्तता, उनकी घातकता, और इन खतरों का मुकाबला करने के लिए मौजूदा वैश्विक रक्षा तंत्र की जानकारी भी शामिल रही।

डॉ वीए सजीव कुमार, वैज्ञानिक 'जी' ने डॉ फणीकुमार को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक और प्रमाण पत्र प्रदान किया।

डील, देहरादून

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डील), देहरादून, में 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ भूपेंद्र सुमन, वैज्ञानिक 'एफ' ने 'फ्री स्पेस ऑप्टिकल कम्युनिकेशन (FSoC)–प्रौद्योगिकियों और अनुप्रयोगों का अवलोकन' विषय पर एक प्रस्तुति दी। FSO संचार ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के लिए एक विश्वसनीय, उच्च गति, और सुरक्षित समाधान के रूप में तेजी से उभर रहा है। संचार माध्यम के रूप में फ्री स्पेस का उपयोग करते हुए, FSO उच्च डेटा दरों और बढ़ी हुई सुरक्षा सहित कई लाभ प्रदान करता है, जो इसे नागरिक और सैन्य दोनों अनुप्रयोगों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाता है। व्याख्यान पत्र 'एडवांसेस इन फ्री स्पेस ऑप्टिकल कम्युनिकेशनः इनेबलिंग हाई कैपेसिटी वायरलेस कनेक्टिविटी फॉर मिलिट्री नेटवर्क्स' विषय पर लिखा गया।

डेबेल, बेंगलुरु

रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलुरु, ने 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। प्रो0 जितेंद्र सिंह, वाणिज्यिक अंतरिक्ष यात्री उम्मीदवार एवं प्रैक्टिस–एयरोस्पेस इंजीनियरिंग फ्लाइट रिसर्च एंड इंडस्ट्री कोऑपरेशन के प्रोफेसर, आरवी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बेंगलुरु, ने 'वाणिज्यिक अंतरिक्ष मिशनों के लिए अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण' विषय पर व्याख्यान दिया।

वे छह वैश्विक क्रू में से वाणिज्यिक अंतरिक्ष यात्री उम्मीदवारों के पहले समूह में चुने गए पहले भारतीय हैं और उन्होंने दिसंबर 2024 में फ्रांस में आयोजित तकनीकी और उत्तरजीविता प्रशिक्षण के ट्रैक 1 को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

श्री दिबाकर पांडा, वैज्ञानिक 'ई' ने 'इलेक्ट्रो–न्यूमैटिक प्रेशर रेगुलेटर फॉर हाई प्रेशर गैसियस ऑक्सीजन सोर्स ऑफ लाइफ सपोर्ट सिस्टम्स फॉर एयरबोर्न एप्लिकेशन्स' विषय पर व्याख्यान दिया। डेबेल के निदेशक डॉ आर इंदुशेखर ने इस दिन के महत्व पर प्रकाश डाला और डेबेल की हालिया वैज्ञानिक उपलब्धियों और भविष्य के दृष्टिकोण को सबके सामने रखा, जिसे प्रयोगशाला अपनाने की योजना बना रही है।

डीएलआरएल, हैदराबाद

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल), हैदराबाद, ने 28 फरवरी 2025 को प्रो0 डॉ सम्राट एल सबत, हैदराबाद विश्वविद्यालय तथा श्री आर के रुधीश, वैज्ञानिक 'एफ', डीएलआरएल द्वारा दो तकनीकी वार्ताएँ आयोजित करने के साथ राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। श्री टी श्रीकांत, वैज्ञानिक 'एफ' ने उद्घाटन संबोधन दिया तथा श्रीमती निधि वर्मा, वैज्ञानिक 'ई' ने अतिथियों का परिचय कराया। डॉ सबत ने 'संज्ञानात्मक रेडियो नेटवर्क के लिए स्पेक्ट्रम सेंसिंग तकनीक' विषय पर बात की। श्री रुधीश ने 'मोबाइल टर्मिनल स्थानीयकरण और भीड़ संवेदन में इसके अनुप्रयोग' विषय पर बात की। उन्होंने सेलुलर EW क्षमताओं, मोबाइल प्रौद्योगिकी पीढ़ियों, मोबाइल संचार के विरुद्ध EW प्रौद्योगिकियों, स्थानीयकरण, और भीड़ संवेदन में अनुप्रयोगों के बारे में बात की। वार्ता का समापन श्री टी अभिलाष, वैज्ञानिक 'ई' द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

डीएमआरएल, हैदराबाद

रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद, ने 4 मार्च 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। डॉ सरबजीत सिंह, वैज्ञानिक 'एफ' ने श्रोताओं का गर्मजोशी से स्वागत किया तथा इस अवसर के विशिष्ट वक्ता, डॉ एम मनिवेल राजा, वैज्ञानिक 'जी', डीएमआरएल का परिचय भी कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ आर बालामुरलीकृष्णन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएमआरएल, ने की। डॉ राजा ने 'नौसेना प्रणालियों के चुंबकीय हस्ताक्षर का पता लगाने के लिए स्पिनट्रॉनिक–आधारित चुंबकीय क्षेत्र संवेदक का विकास' विषय पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। डॉ राजा ने स्पिनट्रॉनिक्स, ह्यूस्लर मिश्र धातुओं और चुंबकीय क्षेत्र सेंसर के निर्माण के लिए क्वांटम सामग्रियों पर नवीनतम शोध को भी साझा किया। इस अत्याधुनिक विज्ञान के विस्तृत अन्वेषण ने दर्शकों को भी मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ बालामुरली कृष्णन ने डॉ राजा को उनके उत्कृष्ट व्याख्यान के सम्मान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। उल्लेखनीय रूप से, डॉ राजा की प्रस्तुति को डीआरडीओ में शीर्ष चार व्याख्यानों में से एक के रूप में चुना गया, जिसके उपलक्ष में उन्हें 27 फरवरी 2025 को डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह में अपना व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित भी किया गया। वहां, सचिव डीडीआरएंडडी एवं अध्यक्ष डीआरडीओ ने उन्हें सिलिकॉन पदक और प्रशस्ति प्रमाण पत्र से सम्मानित किया।

डीआरएल, तेजपुर

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल), तेजपुर, ने 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। श्री नवीनकुमार आर, वैज्ञानिक 'बी' ने 'सिंथेटिक पॉलिमर कचरे के जैव अपघटन की संभावना' विषय पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने मोम कीट (गैलेरिया मेलोनेला) के लेपिडोप्टेरान लार्वा द्वारा प्लास्टिक के अपघटन की संभावना पर बात की। डॉ कंबोज, केंद्र प्रमुख ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक, एक प्रशस्ति पत्र, और स्मृति चिन्ह के रूप में पौधा भेंट करके वक्ता को सम्मानित किया।

इनमास, दिल्ली

डॉ मारिया एम डिसूज़ा, वैज्ञानिक 'जी' ने 6 मार्च 2025 को इनमास, दिल्ली में 'उन्नत मल्टीमोडैलिटी इमेजिंग के माध्यम से अभिघातजन्य मस्तिष्क चोट की समझ' विषय पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान

में वक्ता ने सर सी वी रमन को श्रद्धांजलि दी, जिनके रमन प्रभाव के रूप में वैज्ञानिक योगदान ने भारत को वैश्विक वैज्ञानिक मानचित्र पर ला खड़ा किया। दिन की चर्चा उन्नत एमआर इमेजिंग के माध्यम से अभिघातजन्य मस्तिष्क चोट (TBI) के पैथोफिजियोलॉजी को समझने पर केंद्रित थी। वक्ता ने TBI के निदान और पूर्वानुमान में नवीन एमआर तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डाला और उसमें चुनौतियों पर चर्चा की।

आईआरडीई, देहरादून

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आईआरडीई), देहरादून, ने 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। डॉ अजय कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईआरडीई, ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (IIRS), देहरादून, के निदेशक डॉ आरपी सिंह थे। उन्होंने 'पृथ्वी से परे जीवन की खोज' विषय पर मुख्य व्याख्यान दिया। डॉ जी उन्नीकृष्णन, वैज्ञानिक 'जी', आईआरडीई, ने 'क्वांटम इमेजिंग प्रौद्योगिकी: अवसर और चुनौतियां' विषय पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। इस शुभ अवसर पर डॉ अजय कुमार ने डॉ सी वी रमन की खोज को याद किया। उन्होंने आईआरडीई के वैज्ञानिक समुदाय को उत्कृष्टता और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उनके प्रयास के लिए बधाई दी।

ईसा, दिल्ली

पध्दति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली, ने 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। इस कार्यक्रम में सुश्री चित्रा कुशवाह, वैज्ञानिक 'बी' द्वारा 'गोपनीयता संरक्षण, IoT हमले का पता लगाना, फेडरेटेड नेटवर्क का लाभ उठाना' विषय पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया गया। इस कार्यक्रम में प्रयोगशाला के सभी अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए। सुश्री कुशवाह द्वारा लिखे गए शोध–पत्र को 27 फरवरी 2025 को डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के दौरान प्रस्तुत किए गए डीआरडीओ के चार सर्वश्रेष्ठ व्याख्यान पत्रों में से एक के रूप में चुना गया।

आईटीएम, मसूरी

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम), मसूरी, में 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। ग्रुप कैप्टन एमपी कुंद्रान ने 'एडॉप्शन ऑफ AI इन डिफेन्सः यूनिक बैरियर्स टू ओवरकम' विषय पर व्याख्यान दिया। श्री एसपी डोभाल, निदेशक, आईटीएम, ने ग्रुप कैप्टन कुंद्रान को पदक और प्रशस्ति प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया। श्री डोभाल ने अपने संबोधन में इस वर्ष के विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि नेतृत्व की ओर बढ़ने के लिए वैज्ञानिक स्वभाव और जिज्ञासा महत्वपूर्ण हैं। कार्यक्रम का समापन श्रीमती अनीता मोहिंद्रा, वैज्ञानिक 'एफ' द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

एलआरडीई, बेंगलुरु

इलेक्ट्रोनिक्स एवं रडार विकास स्थापना (एलआरडीई), बेंगलुरु, ने 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री गम्पाला विश्वम, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एलआरडीई, ने किया। उद्घाटन के बाद, श्री जयब्रत चक्रवर्ती, वैज्ञानिक 'एफ' ने 'वायु स्थिति की जागरूकता के लिए समुद्र आधारित वृहत एपर्चर रडार' विषय पर व्याख्यान दिया। एलआरडीई के निदेशक ने श्री जयब्रत चक्रवर्ती, वैज्ञानिक 'एफ' को पदक एवं प्रशस्ति प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ किया गया, जिसमें वर्ष 2024 के लिए प्रशिक्षण–संबंधी गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले अधिकारियों को सम्मानित किया गया।

एमटीआरडीसी, बेंगलुरु

सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केन्द्र (एमटीआरडीसी), बेंगलुरु, में 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। श्री के वेंकटेश्वर राव, वैज्ञानिक 'एफ', इस कार्यक्रम के वक्ता थे। उन्होंने 'सब–THz आवृत्तियों पर ग्राफीन–आधारित EM वेव ट्रांसमिशन लाइनों की क्षीणन विशेषताओं का विश्लेषण' विषय पर एक व्याख्यान दिया। उन्हें डॉ एसके दत्ता, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं केंद्र प्रमुख, एमटीआरडीसी से एक सिलिकॉन पदक और प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।

एनपीओएल, कोच्चि

नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि, ने 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया। डॉ ए रघुनाथ राव, वैज्ञानिक 'जी' ने सभा का स्वागत किया। विज्ञान दिवस पर श्रीमती जी मिनी, वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक (एस एंड टी), एनपीओएल, द्वारा संबोधन दिया गया। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान डॉ सतीश कुमार एस, वैज्ञानिक 'एफ' द्वारा 'लिसनिंग टू दी सी फ्लोरः दी साइंस ऑफ बॉटम बाउंस प्रोपगेशन' विषय पर दिया गया। डॉ डी शेषागिरी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनपीओएल, ने वक्ता को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। व्याख्यान में भारतीय महासागर क्षेत्र में बॉटम बाउंस प्रोपगेशन के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्रस्तुति में दुनिया भर में इसी तरह के कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई। ध्वनिक प्रसार के लिए समुद्र तल की विशेषताओं को समझने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

एनएसटीएल, विशाखापत्तनम

नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), विशाखापत्तनम, ने 5 मार्च 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, डॉ अविनाश चंदर, पूर्व एसए टू आरएम ने डॉ अब्राहम वर्गीस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक एनएसटीएल तथा प्रयोगशाला के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के साथ भारत रत्न डॉ एपीजे अब्दुल कलाम की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। मुख्य अतिथि डॉ चंदर ने एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया और भारतीय परंपरा में विज्ञान की भावना को विस्तार से बताया। श्री के उदयानंद, वैज्ञानिक 'डी' को 'जहाज के डीजल इंजन इनटेक के लिए समानांतर बैफल साइलेंसर के ध्वनिक प्रदर्शन का डिजाइन एवं मूल्यांकन' विषय पर उनके व्याख्यान के लिए सिलिकॉन पदक और प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर, मुख्य अतिथि ने निदेशक, एनएसटीएल तथा प्रौद्योगिकी निदेशक के साथ एआई–सक्षम डेटाबेस 'ज्ञानकोश' लॉन्च किया, जो समुद्री वाहनों के सभी हाइड्रोडायनामिक मॉडल परीक्षण डेटा का ज्ञान भंडार होगा। डेटाबेस को एनएसटीएल ने एक स्टार्ट–अप TridAI, के सहयोग से विकसित किया है।

पीएक्सई, चांदीपुर

प्रूफ एवं प्रयोगात्मक संगठन (पीएक्सई), चांदीपुर, में 28 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के महानिदेशक (मौसम विज्ञान) डॉ मृत्युंजय महापात्रा मौजूद थे। श्री ए बोस, वैज्ञानिक 'जी' एवं सह निदेशक ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने के पीछे के तथ्यों के विषय में जानकारी दी। मुख्य अतिथि ने 'जलवायु परिवर्तन का विज्ञान' विषय पर एक व्याख्यान दिया। श्री अवीक दत्ता, वैज्ञानिक 'ई' को मुख्य अतिथि से राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक और प्रमाण पत्र मिला, जिसका विषय था 'ड्रोन–बेस्ड फोटोग्राममेट्री फॉर फॉल ऑफ शॉट मेजरमेंट इन आल आर्टिलरी टेस्ट रेंज'। श्री सुबोध कुमार नायक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, पीएक्सई, ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी समुदायों को दिन–प्रतिदिन की फायरिंग परीक्षण के अलावा नई शोध गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया।

स्थापना दिवस समारोह

इनमास, दिल्ली

नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, ने 13 फरवरी 2025 को अपना 64वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ उपेंद्र के सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एसएसएस) थे। इस कार्यक्रम में कॉर्पोरेट मुख्यालय और दिल्ली स्थित प्रयोगशालाओं के निदेशक भी शामिल हुए। कार्यक्रम में संस्थान में आयोजित सप्ताह भर की वैज्ञानिक, खेलकूद, और सांस्कृतिक गतिविधियों का समापन हुआ। डॉ सुधीर चांदना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, इनमास, ने अतिथियों का स्वागत किया और विकिरण एवं परमाणु आपातकालीन तैयारियों, विकिरण प्रतिवादों में अनुसंधान एवं विकास, विकिरण परिशोधन और सामरिक युद्धक्षेत्र संचालन के लिए संबद्ध जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकियों में इनमास द्वारा किए गए महत्वपूर्ण प्रयासों पर प्रकाश डाला तथा इनमास की प्रमुख क्षमताओं के बारे में बताया। उन्होंने प्रयोगशाला की हालिया उपलब्धियों और इसकी भविष्य की योजनाओं पर भी चर्चा की।

मुख्य अतिथि डॉ सिंह ने अपने संबोधन में मानव स्वास्थ्य से संबंधित अस्पष्ट क्षेत्रों में R&N आपात स्थितियों और जैव चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में इनमास के योगदान की सराहना की। उन्होंने अकादमिक संस्थानों के साथ सहयोग और उनकी वर्तमान R&D गतिविधियों के अलावा AI और अंतरिक्ष विकिरण जीव विज्ञान जैसी भविष्य की तकनीकों की भागीदारी पर भी जोर दिया।

इस अवसर पर निदेशक ने इनमास के मेधावी कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया। 25 साल की सेवा पूरी करने वाले इनमास कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।

यूएआरएफ, एनपीओएल, कोच्चि

नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि, की एक क्षेत्रीय इकाई अंडरवाटर एकॉस्टिक रिसर्च फैसिलिटी (यूएआरएफ), इडुक्की ने 20 फरवरी 2025 को अपना वार्षिक दिवस मनाया। डॉ डी शेषागिरी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनपीओएल, ने अध्यक्षीय संबोधन दिया, जिसमें उन्होंने कार्यों को समय पर पूरा करने के लिए यूएआरएफ के सभी कर्मचारियों के प्रयास और कड़ी मेहनत की सराहना की।

अपने उद्घाटन संबोधन में, डॉ मनु कोरुल्ला, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (आर एंड एम) ने सोनार प्रणाली के विकास के लिए यूएआरएफ परीक्षण सुविधा के महत्व का उल्लेख किया। गणमान्य व्यक्तियों में शामिल डॉ बिश्वजीत चौबे, वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक डीसीडब्ल्यू एंड ई; श्री मोहन कुमार, जीएम एचएमटी; डॉ रेमादेवी एम, अध्यक्ष, कार्य समिति; श्री टिंटो चाको, सचिव, कार्य समिति; तथा यूनियन प्रतिनिधि श्री एमके अभिलाष और श्री वीरेंद्र कुमार सोनी ने समारोह के दौरान बधाई व्याख्यान दिए।

श्री शाजी पीटर, वैज्ञानिक 'ई' एवं प्रभारी अधिकारी, यूएआरएफ ने सभा का स्वागत किया और पिछले वर्ष की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया, चुनौतियों को प्रस्तुत किया और भविष्य की योजना के बारे में बात की। उन्होंने 127 दिनों में रिकॉर्ड संख्या में 35 परीक्षणों के सफल संचालन, स्पेस प्लेटफॉर्म की कमीशनिंग, जलयानों और मशीनरी के रखरखाव, कार्यालय भवन के नवीनीकरण, और 2024 के दौरान अन्य बुनियादी ढांचे विकास करने पर जोर दिया। श्री विनोद पीआर, तकनीकी अधिकारी 'बी' ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

डीआरडीओ ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 मनाया

डीआरडीओ हर साल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (IWD) मनाता है ताकि डीआरडीओ के सभी कैडर की महिला कर्मचारियों के योगदान को मान्यता दी जा सके। इसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक सहित जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों को मान्यता देना है।

इस वर्ष, ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल), दिल्ली, ने 7–8 मार्च 2025 के दौरान डीआरडीओ भवन, दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह की मेजबानी की।

नई उपलब्धियों के माध्यम से अनुसंधान में सकारात्मक उत्थान करने वाले सेवाभावी वैज्ञानिक– 'SAMPURNA' विषय पर दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्‌घाटन डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आरएंडडी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने डॉ सुमा वर्गीस, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एमसीसी) तथा डॉ मीना मिश्रा (अध्यक्ष IWD–25) उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एसएसपीएल, दिल्ली, और विशिष्ट अतिथियों एवं सम्मानित आमंत्रित वक्ताओं की उपस्थिति में किया, जिनमें श्री आर वेंकटरमणि, अटॉर्नी जर्नल ऑफ इंडिया; डॉ सौम्या स्वामीनाथन, अध्यक्ष, एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन एवं प्रमुख सलाहकार, राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी), दिल्ली; तथा डॉ पूनम गुप्ता, राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त आर्थिक अनुसंधान परिषद (एनसीएईआर) की महानिदेशक शामिल थे।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री वेंकटरमानी ने अपने उद्‌घाटन संबोधन में राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका और योगदान के महत्व पर चर्चा की। डॉ सौम्या स्वामीनाथन ने नीति निर्माण में महिलाओं की भूमिका और योगदान के बारे में बात की। उन्होंने महिलाओं के कार्य जीवन को सुगम करने के लिए बनाई जा रही सरकारी नीतियों की झलक भी दिखाई।

डॉ पूनम गुप्ता ने महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली बहुमुखी भूमिकाओं और जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को जिन पितृसत्तात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उनके बारे में बात की और अपने रोचक सांख्यिकीय डेटा विश्लेषण के साथ कई वास्तविक जीवन के अनुभवों को पेश किया।

स्मारिका का विमोचन 'SAMPURNA' नामक पुस्तक के रूप में किया गया, जिसमें 'महिला सशक्तिकरण' विषय पर 31 कविताएँ और 'विकासशील से विकसित भारत 2047' पर 37 लेख शामिल हैं। इस कार्यक्रम में विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं से 350 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

IWD–25 कार्यक्रम में स्वास्थ्य और कल्याण: सशक्त महिलाओं के लिए आगे का मार्ग और बदलती दुनिया में महिला

नेतृत्व जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पूर्ण सत्र शामिल थे। इन सत्रों की अध्यक्षता डॉ चंद्रिका कौशिक, महानिदेशक (पीसी एंड एसआई), सुश्री वर्गीस तथा सुश्री यू जेया संथी, महानिदेशक (एचआर) ने की। सम्मानित महानिदेशकों ने भी सत्रों में संबोधन दिया। इस कार्यक्रम में वक्ताओं के एक प्रतिष्ठित पैनल ने भाग लिया, जिसमें कश्मीर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर निलोफर खान; प्रोफेसर बी नंदा, मिरांडा हाउस की प्रिंसिपल; डॉ गीता कादयापर्थ, मैक्स अस्पताल की वरिष्ठ ऑन्कोलॉजिस्ट; तनु कश्यप, एनआईएफटी की महानिदेशक; तथा तालिश रे, सुप्रीम कोर्ट की एडवोकेट शामिल थीं।

सभी ने अपने विचारोत्तेजक अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण साझा किए, जिससे सत्र चर्चाओं में गहराई आयी। सत्र न केवल व्यापक बल्कि संवादात्मक भी रहे, जिससे प्रतिभागी गहराई से जुड़े।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह के इतिहास में पहली बार महिला पेटेंट अनुदान प्राप्तकर्ताओं को सम्मानित किया गया, जो उनके अभिनव योगदान को मान्यता देने के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था। इस महत्वपूर्ण सत्र की अध्यक्षता महानिदेशक (आरएंडएम) डॉ मनु कोरुल्ला ने की, जिन्होंने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का एक और मुख्य आकर्षण सर्वश्रेष्ठ कविताओं का पाठ था, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसके बाद सर्वश्रेष्ठ कविताओं और लेखों के रचनाकारों को सम्मानित करने के लिए एक पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। आधिकारिक कार्यक्रम की थीम, 'SAMPURNA' के डिजाइनर को भी उनके कलात्मक योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन डीआरडीओ के महिला कल्याण मंच की अध्यक्ष सुश्री स्मिता एस कामत ने किया। सारे कार्यक्रम परंपरा, रचनात्मकता, और अभिव्यक्ति का एक सुंदर मिश्रण थे, जो देश की विविधता और एकता के साथ–साथ महिलाओं की शक्ति को प्रदर्शित करते हैं। संध्या के मुख्य आकर्षणों में 'रिदम्स ऑफ इंडिया' शामिल था, जो विभिन्न राज्यों के पारंपरिक नृत्यों का एक मनमोहक प्रदर्शन था, और 'वजूद', एक प्रस्तुति जो महिलाओं की शक्ति और कोमलता का प्रतीक थी। समारोह के मुख्य क्षणों में से एक सुंदर नर्सरी की ऐतिहासिक पदयात्रा; सुबह की सैर एक विरासत थी। प्रतिभागियों ने महानिदेशक (एमसीसी), महानिदेशक (पीसी एंड एसआई) तथा एसएसपीएल के निदेशक के साथ पार्क के विनीत परिदृश्यों के माध्यम से एक सुंदर सैर का आनंद लिया। यह सभी के लिए एक ताजगी भरा और यादगार अनुभव था।

भारत के विभिन्न हिस्सों के साथ–साथ डीआरडीओ प्रयोगशालाओं में महिलाओं की उपलब्धियों के वीडियो क्लिपिंग और संदेश भी दिखाए गए ताकि विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उजागर किया जा सके। अंत में, कार्यक्रम के संयोजक डॉ सोमना एस महाजन, वैज्ञानिक 'जी' द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ यह मेगा आयोजन समपन्न हुआ।

डीआरडीओ मुख्यालय में समारोहों के अलावा, डीआरडीओ की निम्नलिखित प्रयोगशालाओं ने भी अपने–अपने स्थानों पर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 मनायाः

डीएल, जोधपुर

7 मार्च 2025 को रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर (डीएलजे), में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। श्रीमती बिनीता ठाकुर, आईपीएस, एडीजी पुलिस हाउसिंग, राजस्थान पुलिस,

मुख्य अतिथि थीं तथा श्री वीएस शेनॉय, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएलजे, ने समारोह की अध्यक्षता की। महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष डॉ अनुराधा बेरा, वैज्ञानिक 'एफ' ने स्वागत व्याख्यान दिया। श्रीमती ठाकुर ने विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने समाज में महिलाओं की बहुआयामी भूमिका, उनके सामने आने वाली चुनौतियों तथा जीवन में काम—काज और तनाव के बीच संतुलन बनाने की तकनीकों के बारे में बताया।

ईसा, दिल्ली

पध्दति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली, ने 10 मार्च 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। इस अवसर पर, डॉ मेघना गोस्वामी, एफएमएस से, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, ने 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता' पर एक व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में, उन्होंने स्वयं की और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, प्रबंधित करने, और प्रभावित करने के महत्व पर जोर दिया।

निदेशक सुश्री दीपाक्षी शाह ने कार्यबल के भीतर लैंगिक समानता बनाए रखने के लिए सभा को संबोधित किया। सभी अधिकारी और कर्मचारी इस कार्यक्रम में शामिल हुए और सक्रिय रूप से भाग लिया।

पीएक्सई, चांदीपुर

12 मार्च 2025 को प्रूफ एवं प्रयोगात्मक संगठन (पीएक्सई), चांदीपुर, में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर, 'महिला समानता के लिए कार्रवाई में तेजी लाना' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री एसके नायक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक ने सभा को संबोधित किया और संगठन के साथ—साथ व्यक्तिगत स्तर पर विभिन्न क्षमताओं में महिलाओं की भूमिका के बारे में बात की।

उन्होंने आयुध भंडारों के गतिशील परीक्षण और विकास में महिलाओं के योगदान पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि लेफ्टिनेंट कर्नल निधि सिंह ने IWD 2025 के विषय पर विस्तार से चर्चा की और प्रतिभागियों को प्रेरित किया। मुख्य वक्ता श्री बीके पीयूष, जोनल समन्वयक, वैज्ञानिक इंजीनियर आर्किटेक्ट (SEA) विंग, नई दिल्ली, ने व्यावहारिक प्रदर्शन के साथ 'राजयोग ध्यान' पर विशेष व्याख्यान दिया। कार्यशाला में कुल 90 कर्मचारियों ने भाग लिया।

डीआईबीटी में अग्नि सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम

रक्षा जैव रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी), मैसूर ने कर्मचारियों, संविदा कर्मचारियों, और छात्रों के बीच अग्नि खतरों, सुरक्षा प्रोटोकॉल्स, और आपातकालीन अग्नि–शमन उपायों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 17 जनवरी 2025 को अग्नि सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री महेश गौड़ा, स्टेशन अग्निशमन अधिकारी, बन्नीमंतप, मैसूर, ने कर्नाटक अग्निशमन और आपातकालीन सेवाओं की टीम के साथ किया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ डीडी वाडीकर, वैज्ञानिक 'एफ' एवं अध्यक्ष, अग्नि और औद्योगिक सुरक्षा समिति के स्वागत संबोधन से हुई, जिन्होंने कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी। डॉ वीए सजीव कुमार, वैज्ञानिक 'जी' एवं सह केंद्र प्रमुख, डीआईबीटी, ने समारोह की अध्यक्षता की और संस्थान के कर्मियों और बुनियादी ढांचे की भलाई सुनिश्चित करने में अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षण के महत्व पर जोर दिया। विभिन्न अग्नि परिदृश्यों के लिए अग्निशामक यंत्रों के व्यावहारिक उपयोग का प्रदर्शन करते हुए एक मॉक ड्रिल आयोजित की गई। कार्यक्रम का समापन श्री एसएस मंजूनाथ, वैज्ञानिक 'ई' एवं सुरक्षा अधिकारी, डीआईबीटी, द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह समारोह

डीआरडीओ मुख्यालय

कार्यस्थल सुरक्षा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए हर साल 4 से 10 मार्च तक सुरक्षा सप्ताह मनाया जाता है। इस वर्ष का विषय है 'विकसित भारत के लिए सुरक्षा और कल्याण महत्वपूर्ण है ' जो वर्ष 2047 तक विकसित भारत को प्राप्त करने के राष्ट्र के दृष्टिकोण के अनुरूप है। गुणवत्ता, विश्वसनीयता, और सुरक्षा निदेशालय (डीक्यूआरएंडएस) ने 6 मार्च 2025 को डीआरडीओ मुख्यालय में इस विषय पर एक वेबिनार भी आयोजित किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में महानिदेशक (पीसीएंडएसआई) डॉ चंद्रिका कौशिक उपस्थित थीं। सुरक्षा के क्षेत्र से दो प्रख्यात वक्ता, डॉ ललित आर गभाने, महानिदेशक एवं मुख्य कार्यकारी, एनएससीआई तथा डॉ केसी वाधवा, पूर्व उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सीफीस ने व्याख्यान दिए। आरंभ में, डीक्यूआरएंडएस के निदेशक वाइस एडमिरल रंजीत सिंह ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा सुरक्षा के महत्व और सुरक्षा ऑडिट एवं प्रशिक्षण की प्रक्रिया के माध्यम से डीआरडीओ में मजबूत सुरक्षा संस्कृति के निर्माण में डीक्यूआरएंडएस की भूमिका के बारे में बताया। महानिदेशक (पीसीएंडएसआई) ने समय–समय पर सुरक्षा ऑडिट आयोजित करके सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को बनाए रखने में डीक्यूआरएंडएस के प्रयासों की प्रशंसा की तथा सभी प्रतिभागियों से इन ऑडिट में सक्रिय रूप से भाग लेने तथा सुरक्षा वातावरण में सुधार के लिए ईमानदार प्रतिपुष्टि और सुझाव देने का आग्रह किया।

डेबेल, बेंगलुरु

कर्मचारियों में सुरक्षा जागरूकता बढ़ाने के लिए 4–10 मार्च 2025 के दौरान रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलुरु, में राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया गया। जागरूकता कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, निबंध लेखन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता जैसे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। श्री सत्यसीलन, वैज्ञानिक 'ई' ने कार्यक्रमों का समन्वय किया। समापन दिवस पर, सभी कर्मचारियों द्वारा 'सुरक्षा शपथ' ली गई, जिसके बाद श्री एमयू विंसी, एसओ/एच, मुख्य अभियंता (सुरक्षा), मुख्यालय न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल), मुंबई, द्वारा विभिन्न सुरक्षा आचरणों पर आमंत्रित व्याख्यान दिया गया। डॉ आर इंदु शेखर, निदेशक, डेबेल, ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

डेसीडॉक, दिल्ली

रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली, ने 4–10 मार्च 2025 के दौरान उत्साह, सहभागिता, और सभी के लिए सुरक्षित कार्य वातावरण प्रदान करने की सामूहिक प्रतिबद्धता के साथ 54वां राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पोस्टर प्रतियोगिता थी, जिसमें डेसीडॉक के कर्मचारियों ने अपनी रचनात्मकता और सुरक्षा प्रोटोकॉल की समझ को जीवंत और सूचनात्मक पोस्टरों के माध्यम से प्रदर्शित किया। सभी के पोस्टरों में प्रदर्शित रचनात्मकता वास्तव में प्रेरणादायक थी और प्रत्येक पोस्टर ने हमारे कार्य के हर पहलू में सुरक्षा महत्व की याद दिलाई।

डेसीडॉक के सभी अधिकारी और कर्मचारी 6 मार्च 2025 को डीक्यूआरएंडएस द्वारा आयोजित ऑनलाइन सुरक्षा व्याख्यान सत्र में शामिल हुए। इसके अलावा, 'घरेलू एलपीजी सिलेंडर में आग लगने पर उसे कैसे बुझाया जाए' विषय पर पांच मिनट का वीडियो भी दिखाया गया।

डीएल, जोधपुर

रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर, में 4–10 मार्च 2025 के दौरान 54वां राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। श्री वी एस शेनॉय, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक, डीएलजे, ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सप्ताह के दौरान अग्नि सुरक्षा अभ्यास, सुरक्षा पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और विभिन्न वार्ताओं का आयोजन किया गया। डॉ ललित आर गभाने, महानिदेशक एवं सीईओ, एनएसआईसी मुंबई ने 'विकसित भारत के लिए सुरक्षा एवं स्वास्थ्य महत्वपूर्ण' विषय पर व्याख्यान दिया तथा डॉ के सी वाधवा पूर्व उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सीफीस ने 'विजन विकसित भारतः अग्नि सुरक्षा सुनिश्चित करें एवं राष्ट्र निर्माण में योगदान दें' विषय पर व्याख्यान दिया।

ईसा, दिल्ली

पध्दति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली, ने 4–10 मार्च 2025 के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत एक उद्घाटन समारोह से हुई, जहां सभी कर्मचारियों ने सुरक्षा शपथ ली, सुरक्षित एवं स्वस्थ कार्यस्थल के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। दो निकासी मॉक ड्रिल और प्राथमिक चिकित्सा जागरूकता कार्यक्रमों सहित विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं, जिनका उद्देश्य आपात स्थितियों के लिए तैयारी और प्रतिक्रिया को बढ़ाना था। श्री दीपक कुमार, सुरक्षा अधिकारी एवं तकनीकी अधिकारी 'बी' ने अग्नि सुरक्षा प्रोटोकॉल और सर्वोत्तम प्रथाओं पर व्याख्यान दिया, जिसके बाद एक

आकर्षक प्रश्नोत्तरी सत्र आयोजित किया गया।

एनएसटीएल, विशाखापत्तनम

4–12 मार्च 2025 के दौरान नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), विशाखापत्तनम, में 54वां राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। श्री एन रवि कुमार, वैज्ञानिक 'एफ' एवं प्रमुख (सुरक्षा) ने इस तथ्य को दोहराया कि एनएसटीएल 'शून्य दुर्घटना–शून्य घटना उद्योग' है तथा एनएसटीएल तकनीकी क्षेत्र के भीतर ही सभी सुरक्षा उपाय उपलब्ध हैं। डॉ अब्राहम वर्गीस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनएसटीएल, ने कार्यस्थल पर सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया और प्रयोगशाला में सुरक्षा पहलुओं को मजबूत करने के लिए उठाए गए विभिन्न कदमों के बारे में बताया। मुख्य अतिथि श्री वी सुरेश, उप मुख्य कारखाना निरीक्षक, आंध्र प्रदेश सरकार, ने खतरों से बचने के लिए निवारक उपायों पर जोर दिया और आवश्यक विभिन्न सुरक्षा उपायों को भी सबके समक्ष रखा और सुरक्षा के महत्व को समझाया।

एनडीआरएफ कर्मियों के लिए इनमास में विचार-विमर्श और चर्चा सत्र

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) के अधिकारियों की सीबीआरएन आपात स्थितियों के प्रबंधन में तैयारी और प्रतिक्रिया क्षमताओं को बढ़ाने के लिए, दिल्ली के नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) में रासायनिक, जैविक, रेडियोलॉजिकल और परमाणु (CBRN) आपातकालीन प्रबंधन पर एक, दो दिवसीय विचार–विमर्श और चर्चा सत्र आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ चंद्रिका कौशिक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (पीसी एंड एसआई); श्री संगीत राव आचार्य, वैज्ञानिक 'जी' निदेशक, डीएलआईसी; तथा डॉ सुधीर चांदना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, इनमास ने किया। इसमें CBRN शमन के लिए नवीन तकनीकों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष प्रदर्शनी भी लगाई गई। इसके अलावा, डॉ यूके सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एसएसएस) की अध्यक्षता में सभी एनडीआरएफ प्रतिभागियों का एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। समापन सत्र में श्री नरेंद्र बुंदेला, महानिरीक्षक, एनडीआरएफ तथा निदेशक, इनमास की उपस्थिति से चार चाँद लग गए। कार्यक्रम का समापन निरंतर प्रशिक्षण और नवाचार के माध्यम से CBRN खतरों के खिलाफ राष्ट्र की समुत्थानशक्ति को मजबूत करने की प्रतिबद्धता के साथ हुआ।

डीएलआरएल में अगली पीढ़ी के EW सिस्टम के लिए Q&R चुनौतियों पर पाठ्यक्रम

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल), हैदराबाद, ने 3–7 फरवरी 2025 के दौरान 'अगली पीढ़ी के EW सिस्टम के समक्ष गुणवत्ता और विश्वसनीयता चुनौतियां' पर एक पाठ्यक्रम आयोजित किया। श्री एन श्रीनिवास राव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएलआरएल, ने डॉ एम चक्रवर्ती, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह निदेशक; श्री के मुरली, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एव सह निदेशक; श्रीमती सोमा वशिष्ठ, वैज्ञानिक 'जी' अवर निदेशक, पी एंड सी निदेशालय, एचआरडी; श्रीमती विराजा वी, वैज्ञानिक 'जी' अतिरिक्त निदेशक, क्यूए निदेशालय; श्री जेआरसी सरमा, वैज्ञानिक 'जी', एचआरडीसी; तथा श्री एस कृष्ण मोहन, वैज्ञानिक 'जी' पाठ्यक्रम निदेशक की उपस्थिति में पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में डीएलआरएल परीक्षण सुविधाओं और ELSEC परीक्षण रेंज के दो दौरों सहित 15 पाठ्यक्रम सत्र शामिल किये गए। पाठ्यक्रम की शुरुआत डॉ अखिलेश पाठक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय निदेशक, आरसीएमए, हैदराबाद के मुख्य व्याख्यान से हुई, जिसमें उन्होंने 'एयरवर्थनेस सर्टिफिकेशनः एनश्योरिंग सरवाइवेबल सिस्टम्स–न्यू एनेबलर्स' विषय पर चर्चा की। अतिथि व्याख्यान यूआरएससी, इसरो, सिस्टर लैबोरेटरीज से 2, उद्यागों से 6, तथा शेष डीएलआरएल के विशेषज्ञों द्वारा दिए गए।

डीआरडीई में विषैले रसायनों के उन्नत विश्लेषणात्मक उपकरणों एवं तकनीक पर पाठ्यक्रम

रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई), ग्वालियर, ने 5–7 फरवरी 2025 के दौरान 'विषाक्त रसायनों के लक्षण–निर्धारण के लिए उन्नत विश्लेषणात्मक उपकरण एवं तकनीक' विषय पर एक पाठ्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य रासायनिक एवं जैविक हथियार सम्मेलन के सत्यापन के बारे में ज्ञान का प्रसार करना तथा देश की तैयारी क्षमताओं को बढ़ाना था। पाठ्यक्रम में विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के चौंतीस प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उद्घाटन कार्यक्रम में डॉ मनमोहन परिदा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीआरडीई, वरिष्ठ वैज्ञानिक, संकाय सदस्य, प्रतिभागी, और शोध विद्वान उपस्थित थे। तीन दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम में डोमेन विशेषज्ञों के व्याख्यानों की एक श्रृंखला भी शामिल थी। रासायनिक युद्ध एजेंटों और पर्यावरण एवं जैव चिकित्सा दोनों नमूनों में उनके मार्करों के सत्यापन के लिए रासायनिक हथियार निषेध संगठन द्वारा नामित प्रयोगशाला, VERTOX प्रयोगशाला में व्यावहारिक प्रदर्शन आयोजित किए गए। डॉ विजय टाक, वैज्ञानिक 'एफ' पाठ्यक्रम निदेशक थे।

डीएमआरएल में शीट स्टील के विरूपण, फटीग, तथा फ्रैक्चर व्यवहार पर आमंत्रित वार्ता

रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद, ने 4 मार्च 2025 को जादवपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रवाश चंद्र चक्रवर्ती द्वारा 'जादवपुर विश्वविद्यालय में शीट स्टील के विरूपण, फटीग, और फ्रैक्चर व्यवहार पर शोध की एक झलक' विषय पर एक आमंत्रित वार्ता का आयोजन किया। डीएमआरएल के वैज्ञानिकों ने इस सत्र में भाग लिया, जिससे उन्नत सामग्री अनुसंधान पर आकर्षक चर्चाओं के लिए एक मंच प्रदत्त हुआ।

डॉ चंदन मंडल, वैज्ञानिक 'जी' ने सभा का स्वागत किया और प्रतिष्ठित वक्ताओं का परिचय कराया। प्रोफेसर चक्रवर्ती की वार्ता तीन प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित थी: सूक्ष्म तन्यता विरूपण, निम्न–चक्र फटीग, और शीट स्टील की फ्रैक्चर कठोरता। उन्होंने सामग्री क्षति का आकलन करने के लिए 'रैचेटिंग डक्टिलिटी' की अवधारणा भी पेश की और ASTM मानकीकरण की कमी को संबोधित करते हुए पतली शीट धातुओं में फ्रैक्चर कठोरता का मूल्यांकन करने के लिए एक नया दृष्टिकोण सबके समक्ष रखा। इसके अलावा, प्रो0 चक्रवर्ती ने जादवपुर विश्वविद्यालय के धातुकर्म और सामग्री इंजीनियरिंग विभाग में चल रही शोध परियोजनाओं और सुविधाओं का अवलोकन साझा किया।

एनपीओएल के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए इन-हाउस पाठ्यक्रम

एनपीओएल के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए इन–हाउस पाठ्यक्रम (INCREON) 18–19 फरवरी 2024 के दौरान आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने अपने स्वास्थ्य, वित्त, और सरकारी लाभों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की।

कोच्चि के मेडिकल ट्रस्ट अस्पताल के कंसल्टेंट जेरियाट्रिशियन डॉ जीनो जॉय ने आयु–संबंधी स्वास्थ्य विकारों पर व्याख्यान दिया तथा सीयूएसएटी के सहायक प्रोफेसर डॉ मनु मेलविन जॉय; प्रसिद्ध योग चिकित्सक के विजयलक्ष्मी अमला; महाराजा कॉलेज, एर्नाकुलम की पूर्व प्रिंसिपल डॉ मैरी मटिल्डा; तथा जाने–माने वित्तीय योजनाकार श्री नौफल जीके ने विभिन्न व्यावहारिक एवं प्रेरक सत्र आयोजित किए। इन–हाउस विशेषज्ञों ने पेंशन भुगतान आदेश (PPO) और पेंशन लाभ के साथ–साथ सीजीएचएस और चिकित्सा प्रतिपूर्ति योजनाओं पर गहन जानकारी प्रदान की।

आईआरडीई में सार्वजनिक खरीद नीति पर जागरूकता कार्यक्रम

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आईआरडीई) ने 3 फरवरी 2025 को सार्वजनिक खरीद नीति पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का लक्ष्य प्रतिभागियों को डीआरडीओ में वस्तुओं और सेवाओं की खरीद के लिए अपनाई जा रही विस्तृत प्रक्रिया से अवगत कराना था, जिसमें संगठन–विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखा गया था। डीआरडीओ मुख्यालय ने वित्त और सामग्री प्रबंधन निदेशालय (डीएफएमएम) के एक प्रतिनिधि को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। श्री जगदीप, वैज्ञानिक 'जी' एवं डीएफएमएम के सहायक निदेशक, इस कार्यक्रम के लिए मुख्य

संसाधन व्यक्ति थे। उन्होंने 'डीआरडीओ प्रयोगशालाओं और प्रतिष्ठानों द्वारा सार्वजनिक खरीद नीति और खरीद के सामान्य मुद्दे' विषय पर एक रोचक व्याख्यान दिया।

अपने व्याख्यान में, श्री जगदीप ने विभिन्न खरीद नीतियों और प्रक्रियाओं को शामिल किया जो डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने खरीद के दौरान सामने आने वाले विभिन्न मुद्दों पर भी चर्चा की और उन्हें दूर करने के लिए कार्रवाई का सुझाव दिया। आईआरडीई के निदेशक की ओर से डॉ शैलेंद्र सिंह यादव, वैज्ञानिक 'जी' आईआरडीई ने श्री जगदीप को सम्मानित किया।

SYNTECH 2.0, चितकारा विश्वविद्यालय, पंजाब में डीजीआरई की उपस्थिति

SYNTECH 2.0: चितकारा विश्वविद्यालय अनुसंधान एवं नवाचार नेटवर्क (एडवांस रिसर्च), चितकारा विश्वविद्यालय, पंजाब, द्वारा 5 फरवरी 2025 को विघटनकारी प्रौद्योगिकियों पर संगोष्ठी निर्धारित की गई थी। डॉ पीके सत्यवली, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीजीआरई, इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि थे और उन्होंने संगोष्ठी का उद्घाटन संबोधन दिया। श्री सचिन कुमार, वैज्ञानिक 'एफ' डीजीआरई ने संगोष्ठी में 'सीमांत क्षेत्र में रक्षा: सामरिक लाभ के लिए आच्छादित प्रौद्योगिकियों का उपयोग' पर एक आमंत्रित व्याख्यान दिया, जिसमें देश भर के शिक्षाविदों और संस्थानों के छात्रों तथा संकायों ने भाग लिया।

दिहार में विशेष पशु परिवहन के प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

IA और ITBP के लड़ाकों के लिए 14 कोर जोन एओआर में OP LGS के लिए विशेष पशु परिवहन (बैक्ट्रियन ऊंट और लद्दाखी याक) के प्रबंधन पर एक, सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 24 फरवरी 2025 से 2 मार्च 2025 के दौरान उच्च उन्नतांश अनुसंधान रक्षा संस्थान (दिहार), लेह में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में भारतीय सेना और भारतीय सीमा पुलिस ब्यूरो (ITBP) के बारह सैनिक शामिल हुए। डीआरडीओ और दिहार के पशु विभाग के आरवीसी कर्मचारियों ने प्रशिक्षुओं को सिखाया कि जानवरों को कैसे संभालना है, उन्हें कैसे रखना है, उन्हें कैसे खिलाना है, बीमारियों को कैसे रोकना है, आम बीमारियों और चोटों का इलाज कैसे करना है, उन्हें कैसे उतारना और चढ़ाना है, उन्हें कैसे परिवहन करना है और विशेष AT में तैनाती के लिए सही तरीकों का उपयोग कैसे करना है।

विस्तृत सैद्धांतिक जानकारी के अलावा, विशेषीकृत AT के व्यावहारिक संचालन और प्रबंधन पर जोर दिया गया, ताकि प्रशिक्षुओं में चुनौतीपूर्ण इलाके में विशेषीकृत AT को बेहतर ढंग से संभालने, प्रशिक्षित करने, उपचार करने, प्रबंधित करने, और तैनात करने का आत्मविश्वास बना रहे।

इनमास में अंतरिक्ष विकिरण के जैविक प्रभावों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

दिल्ली के नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) ने 27 फरवरी 2025 से 1 मार्च 2025 तक मानेकशॉ सेंटर, नई दिल्ली में अंतरिक्ष विकिरण, भारी आयनों, और मानव अंतरिक्ष मिशनों के जैविक प्रभावों पर अंतर्राष्ट्रीय रेडियोबायोलॉजी सम्मेलन–तंत्र और जैव चिकित्सा प्रतिवाद सम्मेलन का आयोजन किया। इनमास के निदेशक डॉ सुधीर चांदना ने सम्मेलन का परिचय दिया और भारत के लिए इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रोफेसर अजय

कुमार सूद ने किया, जबकि डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, विशिष्ट अतिथि थे। विशेष अतिथियों में सर्जन वाइस एडमिरल आरती सरीन, एवीएसएम, वीएसएम, महानिदेशक, सशस्त्र बल चिकित्सा सेवाएं; डॉ उपेंद्र कुमार सिंह, महानिदेशक, सैनिक सहायता प्रणाली, डीआरडीओ; प्रो0 अल्बर्ट जे फोरनेस जूनियर, जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय, यूएसए; तथा डॉ दिनेश कुमार सिंह, निदेशक, मानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र, बेंगलुरु, इसरो के प्रतिनिधि शामिल थे।

सम्मेलन में अमेरिका, जर्मनी, चेक गणराज्य, फ्रांस, सिंगापुर, कोरिया गणराज्य, और स्वीडन सहित नौ देशों के 35 विदेशी वैज्ञानिकों ने व्याख्यान दिए, तथा अंतरिक्ष रेडियोबायोलॉजी में प्रगति पर चर्चा की। सम्मेलन में 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रो0 सूद ने अंतरिक्ष यात्रियों के लिए अंतरिक्ष विकिरण के खतरों पर चर्चा की, जबकि डॉ कामत ने सुरक्षात्मक प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए अंतःविषय सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने जोर देकर कहा कि अंतरिक्ष अन्वेषण एक आधुनिक आवश्यकता है, जिसमें दीर्घकालिक ISS जैसे मिशन विकसित भविष्य के गहरे अंतरिक्ष प्रयासों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। सम्मेलन ने भारत सहित दुनिया भर की अग्रणी प्रयोगशालाओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी और सहयोग की शुरुआत करके भारत के भविष्य के रेडियोबायोलॉजी कार्यक्रम के लिए एक मार्ग प्रशस्त किया।

प्राइम-1 पर पाठ्यक्रम: अनुसंधान एवं विकास प्रबंधन में आवश्यक कौशल (आधारभूत)

डीआरडीओ के भावी परियोजना निदेशकों और उप परियोजना निदेशकों को परियोजना और अनुसंधान एवं विकास प्रबंधन में आवश्यक कौशल से सुसज्जित करने के लिए डिजाइन किया गया, प्राइम–1 (आधारभूत) पाठ्यक्रम 20 जनवरी 2025 से 14 फरवरी 2025 के दौरान प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम), मसूरी, द्वारा आयोजित किया गया। पाठ्यक्रम निदेशक श्री पृथ्वीपाल सिंह, वैज्ञानिक 'डी' के नेतृत्व में आठ डीआरडीओ क्लस्टरों से 41 प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। पाठ्यक्रम की शुरुआत प्रोफेसर प्रतीक किशोर, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एसीई) के उद्घाटन व्याख्यान से हुई। अपने संबोधन में, प्रोफेसर किशोर ने डीआरडीओ के भीतर परियोजना प्रबंधन प्रथाओं पर अपने महत्वपूर्ण विचार साझा किए और वर्तमान प्रक्रियाओं में खामियों को दूर करने के उद्देश्य से आंतरिक समीक्षा समिति की सिफारिशों पर चर्चा की।

उनकी अंतर्दृष्टि ने वैज्ञानिकों को इन चुनौतियों की सक्रिय रूप से पहचान करने और उन्हें हल करने के लिए प्रेरित किया, जिससे निरंतर सुधार और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा।

डीजीआरई में राष्ट्रीय संयुक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राजभाषा संगोष्ठी

13–14 फरवरी, 2025 के दौरान चंडीगढ़ में रक्षा भूसूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरई), ने 'राष्ट्रीय संयुक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राजभाषा संगोष्ठी 2025' का आयोजन किया, जिसका विषय था 'आयुध एवं युद्ध अभियांत्रिकी: उभरती हुई प्रौद्योगिकियां एवं भविष्य की दिशाएं' तथा इसे एआरडीई, एचईएमआरएल, पीएक्सई, सीवीआरडीई, आरएंडडी (इंजीनियर), वीआरडीई, एसीईएम, और एमएससी सहित सभी एसीई क्लस्टर डीआरडीओ प्रयोगशालाओं की मदद से आयोजित किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री अंकथी राजू, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एआरडीई; विशिष्ट अतिथि डॉ अनिल प्रसाद दाश, निदेशक, एचईएमआरएल; तथा डॉ मकरंद गणेश जोशी, आरएंडडी (इंजीनियर) ने किया। डीजीआरई के निदेशक डॉ प्रमोद कुमार सत्यावली ने सभी प्रतिनिधियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और संगोष्ठी की सफलता के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं। मुख्य अतिथि ने संगोष्ठी की स्मारिका का विमोचन किया तथा वैज्ञानिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने के लिए डीजीआरई द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। संगोष्ठी में देश भर की 15 डीआरडीओ प्रयोगशालाओं से 100 से अधिक प्रतिभागियों और प्रतिनिधियों ने भाग लिया। डीजीआरई के अवर निदेशक एवं संगोष्ठी समन्वयक डॉ स्नेहमणि ने सहयोग के लिए क्लस्टर की प्रतिभागी प्रयोगशालाओं के निदेशकों को धन्यवाद दिया तथा संगोष्ठी के सभी प्रतिभागियों और प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

हिंदी कार्यशालाएँ

डेसीडॉक, दिल्ली

रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली, ने 21 मार्च 2025 को 'हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला की अध्यक्षता श्रीमति किरण चौहान, निदेशक, डेसीडॉक, ने की। उन्होंने उद्घाटन सत्र के दौरान उपस्थित लोगों को संबोधित भी किया। इस अवसर पर डॉ अनंत नारायण भट्ट, वैज्ञानिक 'एफ', नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, अतिथि वक्ता थे। उन्होंने बताया कि तकनीकी शोध–पत्र हिंदी में कैसे लिखा जाये, ताकि आम आदमी को उसका अधिक से अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे भारत के संविधान में दिए गए राजभाषा से संबंधित नियमों और दिशा–निर्देशों का पालन करें। श्री तपेश सिन्हा, वैज्ञानिक

'एफ' एवं राजभाषा अधिकारी ने प्रयोगशाला में हिंदी में किए गए कार्यों की रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। कार्यशाला का समन्वयन सहायक निदेशक (हिंदी) श्री संजीव कुमार ने किया।

डीएमआरएल, हैदराबाद

21 फरवरी 2025 को, रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद, ने कार्यस्थल में राजभाषा के उपयोग को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की। श्री पवन कुमार, सहायक निदेशक , डीएमआरएल ने वक्ता, श्री संतोष कुमार, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का स्वागत किया।

अपने संबोधन में, श्री संतोष कुमार ने राजभाषा नीतियों, नियमों, और विनियमों के महत्व पर जोर दिया तथा उनके प्रभावी कार्यान्वयन में कर्मियों की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ एम मणिवेल राजा, वैज्ञानिक 'जी' ने प्रतिभागियों को सक्रिय रूप से हिंदी सीखने और अपने नियमित कार्यों में लागू करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला में विभिन्न संवर्गों से 60 डीएमआरएल कर्मियों की व्यापक भागीदारी देखी गई, जिन्होंने इस तरह के और अधिक समृद्ध सत्र के आयोजन में गहरी रुचि व्यक्त की। कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वयन श्री पवन कुमार, सहायक निदेशक (हिंदी) द्वारा श्री जय प्रकाश, तकनीकी अधिकारी 'ए' के सहयोग से किया गया।

डीएमआरएल, हैदराबाद, में हिंदी कार्यशाला

डीआरएल, तेजपुर

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला, तेजपुर, ने 20 फरवरी 2025 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में दो सत्र हुए। प्रथम सत्र में श्री अमर्त्य बनर्जी, एसआरएफ ने अच्छी प्रयोगशाला पद्धतियों पर व्याख्यान दिया, जबकि दूसरे सत्र में डॉ यांगचेन डोमा भूटिया, वैज्ञानिक, 'ई' ने पारंपरिक औषधियों पर व्याख्यान दिया। पारंपरिक औषधियों पर व्याख्यान का उद्देश्य मौजूदा और नई उभरती बीमारियों के उपचार में पारंपरिक तरीकों और उपचार के विषय में था। इसमें 50 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए।

इनमास , दिल्ली

राजभाषा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए 27 जनवरी 2025 को श्री अजय कुमार, वैज्ञानिक 'ई' द्वारा 'सूचना सुरक्षा पर जागरूकता सत्र' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कुल 120 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को सूचना की गोपनीयता, उपलब्धता, और अखंडता की रक्षा करने के लिए संगठन की जिम्मेदारी के बारे में शिक्षित करना था। स्वागत संबोधन संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' एवं राजभाषा अधिकारी डॉ रश्मि अग्रवाल ने दिया। मुख्य वक्ता श्री अजय कुमार ने सूचना सुरक्षा के

इनमास, दिल्ली, में हिंदी कार्यशाला

बारे में जागरूकता बढ़ाने के विषय में जानकारी साझा की।

आईआरडीई, देहरादून

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आईआरडीई), देहरादून, ने 25 फरवरी 2025 को 'यूनिकोड के विषय में जानकारी और हिंदी टाइपिंग के साथ–साथ हिंदी पत्राचार के लिए विभिन्न उपकरण' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की।

श्री पुनीत वशिष्ठ, वैज्ञानिक 'जी' एवं अवर निदेशक, आईआरडीई ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और दैनिक आधिकारिक गतिविधियों में हिंदी के उपयोग के महत्व पर जोर दिया। श्रीमती मंजू धस्माना, तकनीकी अधिकारी 'सी' ने 'यूनिकोड के विषय में जानकारी' पर व्याख्यान दिया, जबकि श्री अनुज कुमार रुहेला, तकनीकी अधिकारी 'बी' तथा श्री प्रकाश नीरव, आईआरडीई के वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने क्रमशः 'कंप्यूटर के उपयोग से हिंदी टाइपिंग और विभिन्न उपकरणों के विषय में जानकारी' और 'हिंदी अनुवाद और पत्राचार के विभिन्न रूप' विषयों पर चर्चा की। डॉ एल एम पंत, वैज्ञानिक 'एफ' एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा ने प्रतिभागियों और कार्यशाला का परिचय दिया।

एनपीओएल, कोच्चि

नौसेना भौतिक एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि, ने 3 मार्च, 2025 को संसदीय राजभाषा समिति, आईटी उपकरण, और राजभाषा नीति पर केंद्रित वित्तीय वर्ष 2024–25 की चौथी हिंदी कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ दुव्वुरी शेषागिरी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनपीओएल, ने किया। डॉ मधुशील अयिलियत, सहायक महाप्रबंधक, आरबीआई, संकाय सदस्य थे और उन्होंने आधिकारिक भाषा नीति के साथ–साथ आधिकारिक कार्यों में हिंदी के प्रभावी उपयोग पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान की।

एनपीओएल, कोच्चि, में हिंदी कार्यशाला

एनएसटीएल, विशाखापत्तनम

राजभाषा हिंदी में अधिकारियों और कर्मचारियों की रुचि बढ़ाने और आधिकारिक कर्तव्यों में हिंदी का उपयोग करते समय होने वाली झिझक को दूर करने के लिए, 4 मार्च 2025 को एनएसटीएल, विशाखापत्तनम में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। आमंत्रित वक्ता डॉ ललन कुमार, महाप्रबंधक एवं ओआईसी (राजभाषा एवं प्रशासन), विशाखापत्तनम स्टील प्लांट, ने 'राजभाषा की यात्रा' विषय पर एक व्याख्यान दिया।

कार्यशाला में सभी संवर्गों से कुल 36 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला का समन्वयन श्री विवेक शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' एवं राजभाषा अधिकारी ने किया।

एनएसटीएल, विशाखापत्तनम, में हिंदी कार्यशाला

एनएसटीएल में बुनियादी ढांचे का विकास

परिवार कल्याण केंद्र के निर्माण की आधारशिला

विशाखापत्तनम स्थित नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल) में परिवार कल्याण केंद्र के निर्माण की आधारशिला 17 जनवरी 2025 को डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने रखी। इस कार्यक्रम में श्री आरवी हारा प्रसाद, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एनएसएंडएम); डॉ अब्राहम वर्गीस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक एनएसटीएल, डॉ बिश्वजीत चौबे, वैज्ञानिक 'जी', निदेशक (डीसीडब्ल्यूएंडई); श्री आई मणि प्रसाद, मुख्य अभियंता (आरएंडडी) सिकंदराबाद; तथा एनएसटीएल के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

अधिकारियों के आवास का उद्घाटन

डॉ मनु कोरुल्ला, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (आरएंडएम) ने 16 जनवरी 2025 को एनएसटीएल, विशाखापत्तनम, में नए अधिकारी विवाहित आवास (टाइप 5) का उदघाटन किया। इस कार्यक्रम में डॉ अब्राहम वर्गीस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक एनएसटीएलय; डॉ बिश्वजीत चौबे, वैज्ञानिक 'जी', निदेशक (डीसीडब्ल्यू एंड ई); श्री आई मणि प्रसाद, मुख्य अभियंता (आर एंड डी), सिकंदराबाद; तथा कई अन्य लोग उपस्थित थे। डॉ मनु कोरुल्ला ने कहा कि नवनिर्मित विवाहित आवास पूरे डीआरडीओ में सर्वश्रेष्ठ में से एक है।

मेमोरियल ओरेशन अवार्ड

श्री ए एस राठौर, वैज्ञानिक 'एच' एवं उत्कृष्ट वैज्ञानिक, रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर, को श्री ए नागरत्नम मेमोरियल ओरेशन अवार्ड–2025 से सम्मानित किया गया। 29–31 जनवरी 2025 के दौरान मुंबई में आयोजित 35वें भारतीय विकिरण संरक्षण संघ राष्ट्रीय सम्मेलन (IARPNC–2025) के दौरान परमाणु ऊर्जा विनियामक बोर्ड के अध्यक्ष श्री डी के शुक्ला ने उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया।

उच्च योग्यता अर्जन

रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद, से वैज्ञानिक 'ई' श्री महेश कुमार कुमावत को उनके थीसिस शीर्षक "युनिएक्सिअल फटीग बिहेवियर ऑफ फ्रीस्टैंडिंग प्लैटिनम–एल्यूमिनाइड (PtAl) बॉन्ड कोट" के लिए आईआईएससी, बेंगलुरु द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई।

हैदराबाद स्थित रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल) से वैज्ञानिक 'ई' श्री जी सुकुमार को उनके थीसिस शीर्षक "थर्मो मैकेनिकल प्रोसेसिंग, डायनेमिक डिफॉर्मेशन एंड बैलिस्टिक परफॉरमेंस ऑफ Ti-4Al-2.5V-1.5Fe-0.250 अलॉय" के लिए आईआईटी, मद्रास द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई।

डीआरडीओ दक्षिण क्षेत्र तथा अखिल भारतीय अंतर क्षेत्र वॉलीबॉल प्रतियोगिता

वर्ष 2024–25 के लिए डीआरडीओ दक्षिण क्षेत्र वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास संस्थापन (सीवीआरडीई), चेन्नई, द्वारा 17–19 फरवरी 2025 के दौरान किया गया। प्रतियोगिता में कुल 11 टीमों ने भाग लिया। एनपीओएल, कोच्चि तथा एडीई, बैंगलोर ने क्रमशः विजेता और उपविजेता का स्थान प्राप्त किया। सीवीआरडीई ने 20–21 फरवरी, 2025 के दौरान डीआरडीओ अखिल भारतीय अंतर क्षेत्र वॉलीबॉल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया।

कुल 4 टीमों (अर्थात उत्तर, दक्षिण, केंद्रीय, और पश्चिम) ने भाग लिया। दक्षिण क्षेत्र और केंद्रीय ने क्रमशः विजेता और उपविजेता का स्थान प्राप्त किया। श्री जे राजेश कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, सीवीआरडीई, ने उद्घाटन समारोह में भाग लिया तथा डॉ वी बालामुरुगन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह निदेशक, सीवीआरडीई, ने दोनों प्रतियोगिताओं के समापन समारोह में भाग लिया।

डीआरडीओ प्रयोगशालाओं में आगंतुक

केयर, बेंगलुरु

13 फरवरी 2025 को जनरल अनिल चौहान, पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, एसएम, वीएसएम चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) तथा उनकी टीम ने केयर का दौरा किया। डॉ ऋतुराज कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, केयर द्वारा ब्रीफिंग की गई, जिसके बाद इंटेलिजेंट सिस्टम एवं रोबोटिक्स, स्थल और नौसेना बलों के लिए कमांड एवं कंट्रोल तकनीक, सूचना सुरक्षा, संचार सुरक्षा, और भौगोलिक सूचना प्रणाली के क्षेत्र में केयर द्वारा विकसित तकनीकों पर चर्चा और प्रदर्शन आयोजित किया गया।

केयर, बेंगलुरु, में जनरल अनिल चौहान को सम्मानित करते डॉ ऋतुराज कुमार

डीआईबीटी, मैसूर

3 मार्च 2025 को मेजर जनरल मोहित महेंद्रू, डीसीसीआई, एएससी सेंटर एवं कॉलेज, बेंगलुरु, ने जैव–रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी), मैसूर, का दौरा किया। उनका स्वागत डीआईबीटी के केंद्र प्रमुख डॉ आर कुमार और संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। अपने दौरे के दौरान, डॉ कुमार ने डीआईबीटी के मिशन, अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और चल रही शोध गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए एक व्यापक प्रस्तुति दी। प्रस्तुति में जैव–रक्षा प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने और सशस्त्र बलों के लिए नवीन पोषण संबंधी आवश्यकताओं को विकसित करने में संस्थान की भूमिका को रेखांकित किया गया।

डीआईबीटी, मैसूर में मेजर जनरल मोहित महेंद्रू

डीजीआरई, चंडीगढ़

6 मार्च 2025 को डॉ यू के सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एस एस एस) तथा महानिदेशक (एस एस एस) कार्यालय के अधिकारियों की टीम ने रक्षा भू–सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरई), चंडीगढ़ का दौरा किया। डॉ पीके सत्यवली, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीजीआरई, ने डॉ सिंह का स्वागत किया और उन्हें डीजीआरई में चल रहे विभिन्न अनुसंधान एवं विकास, तकनीकी गतिविधियों, परिचालन गतिविधियों और सहायता सेवाओं के बारे में जानकारी दी। डॉ सिंह ने प्रदर्शनियों के स्थिर प्रदर्शन और वी आर सुविधा तथा उत्पादों का भी दौरा किया और उन्हें डीजीआरई के मॉडलों के बारे में जानकारी दी गई। महानिदेशक (एसएसएस) ने डीजीआरई के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की, यात्रा के दौरान डीजीआरई कर्मियों को अपना पहला आधिकारिक संबोधन

दिया और उन्हें आश्वासन दिया कि महानिदेशक (एसएसएस) का कार्यालय भविष्य में भी डीजीआरई को समर्थन देना जारी रखेगा।

डीएमआरएल, हैदराबाद

20–21 फरवरी 2025 के दौरान रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद, ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), वारंगल के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के 4 संकाय सदस्यों के साथ 140 छात्रों के लिए एक औद्योगिक दौरे की मेजबानी की।

छात्रों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया, जिसके बाद उन्हें डीएमआरएल की अब तक की यात्रा, अनुसंधान विषयों, और तकनीकी उपलब्धियों को प्रदर्शित करने वाला एक परिचयात्मक वीडियो दिखाया गया। डॉ सरबजीत सिंह, वैज्ञानिक 'एफ' ने प्रयोगशाला की प्रमुख प्रगति पर प्रकाश डालते हुए सभा को संबोधित किया तथा अनुसंधान संस्थानों और शिक्षाविदों के बीच सहयोग के महत्व पर जोर दिया।

यात्रा के एक हिस्से के रूप में, छात्रों ने विभिन्न तकनीकी प्रभागों का अन्वेषण किया, डीएमआरएल के अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और चल रही अनुसंधान गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

ईसा , दिल्ली

21 फरवरी 2025 को सेंटर फॉर ऑटोमेटेड मिलिट्री सर्वे (CAMS) के छात्रों ने सेना, नौसेना, और वायु सेना के लिए ईसा द्वारा विकसित वॉरगेम सॉफ्टवेयर के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए पध्दति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली, का दौरा किया। वॉरगेम सॉफ्टवेयर का तकनीकी प्रस्तुतिकरण–सह–प्रदर्शन श्री अरविंद कुमार महला, वैज्ञानिक 'जी', श्री हरिंदर कुमार धोलता, वैज्ञानिक 'ई', श्री गौरव गुप्ता, वैज्ञानिक 'ई' तथा श्री अनुराग पाठक, वैज्ञानिक 'ई' द्वारा दिया गया।

डीजीआरई, चंडीगढ़ में अपने दौरे के दौरान डॉ यू के सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एसएसएस)

डीएमआरएल, हैदराबाद में एनआईटी वारंगल के छात्र

ईसा, दिल्ली में सेंटर फॉर ऑटोमेटेड मिलिट्री सर्वे के छात्र

डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली–110 054 द्वारा प्रकाशित